وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٦﴾

(६) धरती पर चलते-फिरते जितने भी जीवधारी हैं सभी की जीविका अल्लाह (तआला) पर है[1] वही उनके रहने का स्थान भी जानता है तथा उनको अर्पित किये जाने का स्थान[2] भी, सभी कुछ खुली किताब में विद्यमान है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ

(७) तथा अल्लाह ही वह है जिस ने छः दिन में आकाशों तथा धरती को उत्पन्न किया तथा उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था,[3] ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में अच्छे कर्म वाला कौन है ?[4] यदि आप उनसे कहें कि

---

[1]अर्थात वह प्रभारी तथा उत्तरदायी है। धरती पर चलने वाला प्रत्येक जीव मानव हो अथवा जिन्न, पशु हो अथवा पक्षी, छोटा हो अथवा बड़ा, जलीय हो अथवा थलीय, प्रत्येक के लिए उसकी श्रेणी तथा जाति की आवश्यकतानुसार वह भोजन का प्रबंध करता है।

[2] مستقر तथा مستودع के भावार्थ में मतभेद है। कुछ के निकट वह स्थान जहाँ चल-फिर कर पहुँचने पर रुक जाये مستقر (मुस्तक़र) कहते हैं तथा जिसको स्थाई निवास बनाये वह مستودع है। कुछ के निकट माता का गर्भाशय (मुस्तकर) तथा पिता की पीठ (मुस्तौदआ) है तथा कुछ के निकट जीवन काल में मानव तथा पशु जहाँ निवास करे, वह उसका (मुस्तकर) है तथा जहाँ मरने के पश्चात गाड़ दिया गया हो वह (मुस्तौदआ) है (तफ़सीर इब्ने कसीर) इमाम शौकानी कहते हैं "मुस्तकर" का तात्पर्य माता का गर्भाशय तथा "मुस्तौदआ" से धरती का वह भाग है जिस में वह गाड़ा गया हो तथा इमाम हाकिम के एक कथनानुसार इसी को प्राथमिकता दी है। अन्ततः जो भी अर्थ लिया जाये, आयत का भावार्थ स्पष्ट है कि चूँकि अल्लाह तआला को प्रत्येक के (मुस्तकर) तथा (मुस्तौदआ) का ज्ञान है, इसलिये वह प्रत्येक को भोजन पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है तथा ज़िम्मेदार है तथा वह अपना कर्तव्य पूरा करता है।

[3]यही बात सहीह हदीस से भी सिद्ध होती है। अतः एक हदीस में आता है "अल्लाह तआला ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति से पचास हज़ार वर्ष पूर्व जीवों का भाग्य लिखा, उस समय उस का अर्श पानी पर था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, अन्य देखिये सहीह बुख़ारी, बदउल ख़ल्क़)

[4]अर्थात ये आकाश तथा धरती यूँ ही व्यर्थ बिना उद्देश्य के नहीं बनाये गये, बल्कि उसका उद्देश्य मानव तथा दानव की परीक्षा लेना है कि कौन अच्छे कर्म करता है ?

لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوٓا إِنۡ هَٰذَآ إِلَّا سِحۡرٞ مُّبِينٞ ⑦

तुम लोग मरने के पश्चात् फिर जीवित किये जाओगे, तो काफ़िर (अधर्मी) उत्तर देंगे कि ये तो केवल खुला जादू ही है।

وَلَئِنۡ أَخَّرۡنَا عَنۡهُمُ ٱلۡعَذَابَ إِلَىٰٓ أُمَّةٖ مَّعۡدُودَةٖ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحۡبِسُهُۥٓۗ أَلَا يَوۡمَ يَأۡتِيهِمۡ لَيۡسَ مَصۡرُوفًا عَنۡهُمۡ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُواْ بِهِۦ يَسۡتَهۡزِءُونَ ⑧

(८) तथा यदि हम उन से यातना को कुछ समय तक के लिये निलम्बित कर दें, तो यह अवश्य पुकार उठेंगे कि यातना को कौन-सी चीज़ रोके हुई है। सुनो ! जिस दिन वह उनके निकट आयेगा, फिर उनसे टलने वाला नहीं, फिर तो जिसका उपहास कर रहे थे, वह उन्हीं पर उलट पड़ेगा।[1]

وَلَئِنۡ أَذَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ مِنَّا رَحۡمَةٗ ثُمَّ نَزَعۡنَٰهَا مِنۡهُ إِنَّهُۥ لَيَـُٔوسٞ كَفُورٞ ⑨

(९) तथा यदि हम मानव को किसी सुख का स्वाद चखा कर फिर उसे उस से ले लें तो वह अत्यधिक निराश तथा अत्यधिक कृतघ्न बन जाता है।[2]

وَلَئِنۡ أَذَقۡنَٰهُ نَعۡمَآءَ بَعۡدَ ضَرَّآءَ مَسَّتۡهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ ٱلسَّيِّـَٔاتُ

(१०) तथा यदि हम उसे कोई सुख पहुँचायें, उस कठिनाई के पश्चात् जो उसे पहुँच चुकी थी तो वह कहने लगता है कि बस बुराईयाँ

टिप्पणी : अल्लाह तआला ने यहाँ यह नहीं कहा कि कौन अधिक कर्म करता है अपितु कहा कि कौन अधिक अच्छे कर्म करता है इसलिये कि अच्छा कर्म वही होता है, जोअल्लाह की प्रसन्नता के लिये किया जाये, तथा दूसरा सुन्नत के अनुसार हो। इन दो प्रतिबन्धों में से एक भी न रह जाये, तो वह अच्छा कर्म नहीं रहेगा, फिर वह चाहे जितना अधिक क्यों न हो, अल्लाह के यहाँ उस का कोई मूल्य नहीं है।

[1]यहाँ शीघ्र माँग करने को "उपहास" कहा गया है क्योंकि वह शीघ्रता की माँग उपहास के लिये ही होती थी। अतः उद्देश्य यह समझाना है कि अल्लाह (तआला) की ओर से देरी पर मनुष्य को असावधान नहीं रहना चाहिये, उसकी पकड़ किसी भी समय हो सकती है।

[2]मानव जाति में सामान्यतः जो दुर्गुण पाये जाते हैं इस में तथा अगली आयत में उन का वर्णन है। निराशा का सम्बंध भविष्य से है तथा कृतघ्नता का भूत तथा वर्तमान से।

عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۙ﴿۱۰﴾

मुझ से जाती रहीं,[1] निःसन्देह वह बड़ा ही प्रसन्न होकर गर्व करने लगता है ।[2]

اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿۱۱﴾

(११) उनके सिवाय जो धैर्य रखते हैं तथा पुण्य कार्यों में लगे रहते है। उन्हीं लोगों के लिये क्षमा भी है तथा बहुत बड़ा प्रत्युप्कार भी ।[3]

---

[1]अर्थात समझता है कि कठिनाईयों का काल समाप्त हो गया है, अब उसे कोई कठिनाई नहीं आयेगी ।

समुदाय के विभिन्न भावार्थ : आयत संख्या ८ में "उम्मत" शब्द आया है । यह क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न अर्थों में प्रयोग हुआ है । أمة शब्द أم से बना है जिसका अर्थ निश्चय करने के हैं । यहाँ इसका अर्थ 'उस समय' तथा अवधि के हैं, जो यातना के लिये निश्चित है (फ़तहुल क़दीर) *सूरः यूसुफ़* की आयत संख्या ४५ ﴿وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ﴾ में भी यही अर्थ है । इसके अतिरिक्त जिन अर्थों में इसका प्रयोग हुआ है, उनमें एक इमाम तथा अगुवा है जैसे ﴿اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً﴾ (*अन्नहल*-१२०) नियम तथा धर्म है, जैसे ﴿اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ﴾ (*अल-ज़ुखरूफ़*-२३) पार्टी तथा गुट है जैसे ﴿وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ﴾ (*सूरः अल-क़सस*-२३) ﴿وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ﴾ (*सूरः अल-आराफ़*-१५९) आदि । वह विशेष समुदाय अथवा सम्प्रदाय है, जिसकी ओर कोई रसूल भेजा गया हो । ﴿وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ﴾ (*सूरः यूनुस*-४७) इसको आमंत्रित समुदाय भी कहते हैं। तथा उसी प्रकार पैग़म्बर पर ईमान लाने वालों को भी उम्मत (समुदाय) अथवा अनुयायी समुदाय अथवा आज्ञाकारी समुदाय कहा जाता है । (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात जो कुछ उसके पास है, उस पर इतराता तथा दूसरों पर गर्व तथा अहकार दिखाता है परन्तु इन दुर्गुणों से ईमान वाले तथा पुनीत लोग अलग हैं, जैसाकि अगली आयत से स्पष्ट है ।

[3]अर्थात ईमानवाले सुख-सुविधा हो अथवा तंगी तथा दुख, दोनों अवस्थाओं में अल्लाह के आदेशों के अधीन काम करते हैं। जैसाकि हदीस में आता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सौगन्ध खाकर कहा, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके नियन्त्रण में मेरे प्राण हैं, अल्लाह तआला ईमानवालों के लिये जो भी निर्णय करता है, उसमें उसके लिये भलाई का पक्ष होता है। यदि उसको सुख प्राप्त होता है, तो वह अल्लाह का कृतज्ञ होता है जो उसके लिये अच्छा है (अर्थात प्रतिफल का कारण) है तथा यदि कोई दुख पहुँचता है तो धैर्य रखता है, वह भी उसके लिये अच्छा (अर्थात प्रतिफल तथा पुण्य का कारण) है यह विशेषता एक ईमानवाले के अतिरिक्त किसी को प्राप्त नहीं।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ोहद, बाबुल मोमिन अमरुहू कुल्लुहु ख़ैर) तथा एक अन्य हदीस में फ़रमाया:

(१२) तो शायद कि आप उस वह्यी (प्रकाशना) के किसी भाग को छोड़ देने वाले हैं, जो आप की ओर उतारी जाती है तथा उससे आपका हृदय संकुचित है, केवल उनकी इस बात पर कि इस पर कोई कोष क्यों नही उतरा ? अथवा इस के साथ कोई फ़रिश्ता ही आता, सुन लीजिये ! आप तो केवल डराने वाले ही हैं[1] तथा हर चीज़ का संरक्षक केवल अल्लाह तआला है।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوحٰٓى إِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ أَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ إِنَّمَآ أَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٢﴾

(१३) क्या ये कहते हैं कि इस क़ुरआन को उसी ने गढ़ा है। उत्तर दीजिये कि फिर तुम भी इस के समान दस सूरः गढ़ी हुई ले आओ

أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَأْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا

"मोमिन को जो भी दुख-दर्द तथा कठिनाई पहुँचती है, यहाँ तक कि उसे काँटा चुभ जाता है, तो अल्लाह तआला उस के कारण उस की त्रुटियों को क्षमा कर देता है।" (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ ४) *सूरः मआरिज* की आयतों संख्या १९ तथा २२ में भी इस विषय का वर्णन है।

[1]मूर्तिपूजक नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कहा करते थे कि उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता, अथवा उस की ओर कोई कोष क्यों नहीं उतार दिया जाता ? (*सूरः अल-फुरक़ान-८*) एक अन्य स्थान पर कहा गया है "हमें ज्ञान है कि यह लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विषय में जो बातें कहते हैं, उन से आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुखी होते हैं।" (*सूरः अल-हिज्र-९८*) इस आयत में उन्हीं बातों के सम्बन्ध में कहा जा रहा है कि शायद आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुखी होते हों, सम्भव है आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वह उन्हें सुनाना अप्रिय समझें। परन्तु आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इन बातों से निश्चिंत होकर, उन को अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) सुनायें, उन्हें प्रिय हो अथवा अप्रिय, वे स्वीकार करें अथवा अस्वीकार। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कर्तव्य केवल सर्तक करना तथा चेतावनी है, वह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) प्रत्येक अवस्था में किये जायें।

مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ⑬

तथा अल्लाह के अतिरिक्त जिसे चाहो अपने साथ सम्मिलित भी कर लो यदि तुम सच्चे हो ।[1]

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ⑭

(१४) फिर यदि वे तुम्हारी इस बात को स्वीकार न करें, तो तुम निश्चित रूप से जान लो कि यह क़ुरआन अल्लाह के ज्ञान के साथ उतारा गया है। तथा यह कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तो क्या तुम मुसलमान होते हो ?[2]

مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ

(१५) जो व्यक्ति सांसारिक जीवन तथा उसकी शोभा पर रीझा हुआ हो, हम ऐसों को उनके

---

[1]इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं कि पहले अल्लाह तआला ने चुनौती दी कि यदि तुम इस दावे में सच्चे हो कि यह मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का गढ़ा हुआ क़ुरआन है, तो इस के समान प्रस्तुत कर के दिखा दो, तथा तुम जिसकी चाहो, सहायता प्राप्त कर लो, परन्तु तुम कभी भी ऐसा न कर सकोगे। फ़रमाया :

﴿ قُل لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَٰذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴾

"कह दीजिये ! यदि कुल मानव तथा दानव मिलकर ऐसा क़ुरआन लाना चाहें तो इस के समान नहीं ला सकेंगे यद्यपि वह परस्पर में सहायक बन जायें।"(*सूरः बनी इस्राईल*-८८)

इस के पश्चात् अल्लाह तआला ने यह चुनौती दिया कि पूरा क़ुरआन बनाकर प्रस्तुत नहीं कर सकते, तो दस सूरतें ही बना कर प्रस्तुत करो। जैसाकि इस स्थान पर है। फिर तृतीय स्थान पर चुनौती दिया कि चलो एक ही सूरः बना कर प्रस्तुत करो जैसाकि सूरः यूनुस की आयत संख्या ३१ तथा सूरः *अल-बकरः* के प्रारम्भ में कहा गया है (तफ़सीर इब्ने कसीर *सूरः यूनुस* प्रस्तुत आयत के अर्न्तगत) तथा इस आधार पर अन्तिम चुनौती यह हो सकती है कि इस जैसी एक बात ही बना कर प्रस्तुत करो।

﴿ فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴾ (*सूरः अल-तूर*-३४) परन्तु आयतों के उतरने के क्रम चुनौती के इस क्रम को समर्थन नहीं देता। والله أعلم بالصواب

[2]अर्थात क्या इस के पश्चात भी कि तुम इस चुनौती का उत्तर देने में असमर्थ हो, यह मानने के लिये, कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, तैयार नहीं हो तथा न मुसलमान होने के लिये तैयार हो ?

सभी कर्म (का बदला) यहीं पूर्णरूप से पहुँचा देते हैं तथा यहाँ उन्हें कोई कमी नहीं की जाती।

فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾

(१६) हाँ, यही वे लोग हैं जिन के लिये परलोक में आग के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं तथा जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा वहाँ सब व्यर्थ है तथा जो कुछ उन के कर्म थे वह सब नाश होने वाले हैं।[1]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

(१७) वह जो अपने पालनहार की ओर से एक तर्क पर हो तथा उस के साथ अल्लाह की ओर से गवाह हो तथा उस से पूर्व मूसा की किताब (गवाह हो) जो पथ-प्रदर्शक तथा दया है (अन्यों के समान हो सकता है ?)[2] यही

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ

---

[1]इन दो आयतों के विषय में कुछ का विचार है कि इस में पाखण्डी लोगों की चर्चा है, कुछ के निकट इस से तात्पर्य यहूदी तथा इसाई हैं तथा कुछ के निकट इस में दुनिया के अभिलाषी लोगों का वर्णन है। क्योंकि अवसरवादी भी जो अच्छे कर्म करते हैं, अल्लाह तआला उन का बदला उन्हें दुनिया में दे देता है, आख़िरत में उनके लिये दण्ड के सिवाय कुछ न होगा। इस विषय को क़ुरआन मजीद में सूर: बनी इस्राईल आयत १८ तथा २१ एवं सूर: शूरा आयत २० में वर्णन किया गया है।

[2]निवर्तियों तथा काफ़िरों के सापेक्ष स्वाभावयुक्त लोगों तथा ईमान वालों का वर्णन किया जा रहा है। "अपने प्रभु की ओर से तर्क" से तात्पर्य वह प्रकृति है जिस पर अल्लाह तआला ने मानव को पैदा किया तथा वह है एक अल्लाह को मानना तथा उसी की इबादत (वंदना)। जिस प्रकार कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है, "प्रत्येक बच्चा प्रकृति पर जन्म लेता है, परन्तु उसके पीछे उसके माता-पिता उसे यहूदी, इसाई अथवा अग्निपूजक बना देते हैं .....।" (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ तथा सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र) يتلوه का अर्थ है उसके पीछे अर्थात उसके साथ अल्लाह की ओर से एक गवाह भी हो, गवाह से तात्पर्य क़ुरआन अथवा मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं, जो उस सत्य प्रकृति की ओर आमंत्रित तथा उसकी ओर संकेत करते हैं। तथा इससे पूर्व मूसा की किताब तौरात जो पथ प्रदर्शक थी तथा कृपा का कारण भी थी।

مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ⑰

लोग हैं जो उस पर ईमान रखते हैं ।[1] तथा सभी गुटों में से जो भी इसका इंकारी हो, उसके अन्तिम वायदे का स्थान नरक है,[2] फिर तू उसमें किसी प्रकार के संदेह में न हो, नि:संदेह यह तेरे प्रभु की ओर से साक्षात सत्य है, परन्तु अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं होते ।[3]

अर्थात यह मूसा की किताब भी क़ुरआन पर ईमान लाने का मार्ग दिखाती है । अर्थ यह है कि एक व्यक्ति वह है जो इंकार करता है तथा काफ़िर है तथा उसकी तुलना में एक अन्य व्यक्ति है जो अल्लाह की ओर से आये तर्क पर स्थिर है, उस पर एक गवाह (क़ुरआन अथवा इस्लाम के पैग़म्बर) भी हैं, उसी प्रकार उससे पूर्व उतरने वाली किताब तौरात से भी उसके लिये मार्ग दर्शन का प्रबन्ध है । तथा वह ईमान ले आता है, क्या यह दोनों व्यक्ति समान हो सकते हैं ? अर्थात यह दोनों व्यक्ति समान नहीं हो सकते । क्योंकि एक ईमान वाला है दूसरा काफ़िर । एक प्रत्येक प्रकार के प्रमाणों से विभूषित है तथा दूसरा बिल्कुल शून्य है ।

[1]जिनके अंदर पूर्वोक्त विशेषतायें पायी जायेंगी, वह पवित्र क़ुरआन तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लायेंगे ।

[2]सभी गुटों से तात्पर्य सम्पूर्ण धरती पर पाये जाने वाले धर्म हैं, यहूदी, इसाई, अग्निपूजक, बौद्धधर्म, मूर्तिपूजक, काफ़िर तथा अन्य, जो भी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तथा क़ुरआन पर ईमान नहीं लायेगा, उसका निवास नरक है । यह वही विषय है जिसे इस हदीस में वर्णित किया गया है "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके नियन्त्रण में मेरा प्राण है, इस समुदाय के जिस यहूदी अथवा इसाई ने भी मेरी नबूअत के विषय में सुना तथा फिर मुझ पर ईमान नहीं लाया, वह नरक में जायेगा ।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान बाब वजूबुल ईमान विरिसालते नबियेना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इला जमीइन्नासे) यह विषय इससे पूर्व सूर: अल-बक़र: आयत संख्या ६२ तथा सूर: निसा आयत संख्या १५० तथा १५२ में भी गुज़र चुका है ।

[3]यह वही विषय है जो क़ुरआन मजीद के अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है ।

﴿ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴾

"तेरी इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग ईमान नहीं लायेंगे ।" (सूर: यूसुफ़-१०३)

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे ।[1] ये लोग अपने पालनहार के समक्ष प्रस्तुत किये जायेंगे तथा सारे गवाह कहेंगे कि ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार पर झूठ बाँधा, सावधान ! अल्लाह की धिक्कार है अत्याचारियों पर ।[2]

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿١٩﴾

(१९) जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं तथा उसमें त्रुटि की खोज कर लेते हैं ।[3] यही वह लोग हैं जो परलोक का इंकार करते हैं ।

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ

(२०) न ये लोग संसार में अल्लाह को पराजित कर सके तथा न उनका कोई पक्षधर अल्लाह के सिवाय हुआ, उनके लिये यातना दुगुनी की

﴿ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴾

"इब्लीस ने अपना विचार सच्चा कर दिखाया, ईमान वालों के एक गुट के अतिरिक्त, सब उसके अनुयायी बन गये ।"(सूर: *सबा*-२०)

[1]अर्थात जिनको अल्लाह तआला ने सृष्टि में उपभोग करने का तथा आख़िरत में सिफ़ारिश करने का अधिकार नहीं दिया है, उनके विषय में यह कहा जाये कि अल्लाह ने उन्हें यह अधिकार दिया है ।

[2]हदीस में इस की व्याख्या इस प्रकार आती है कि क़ियामत (प्रलय) के दिन अल्लाह तआला एक ईमान वाले से उसके पापों को स्वीकार करायेगा कि तुझे ज्ञात है कि तूने अमुक पाप किया था, अमुक भी किया था, वह ईमान वाला कहेगा हाँ ठीक है । अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैंने उन पापों पर दुनिया में भी पर्दा डाल रखा था, जा आज भी उन्हें क्षमा करता हूँ । परन्तु अन्य लोग अथवा काफ़िरों का मामला ऐसा होगा कि उन्हें गवाहों के समक्ष पुकारा जायेगा तथा गवाह यह गवाही देंगे कि यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने प्रभु पर झूठ बाँधा था । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: हूद)

[3]अर्थात लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये उसमें त्रुटियाँ खोजते हैं तथा लोगों को उससे भड़काते हैं ।

الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ﴿٢٠﴾

जायेगी, न ये सुनने की शक्ति रखते थे तथा न ये देखते ही थे ।[1]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢١﴾

(२१) यही हैं जिन्होंने अपनी हानि आप कर लिया तथा जिन से अपना बाँधा हुआ झूठ खो गया ।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) नि:संदेह यही लोग आख़िरत (परलोक) में क्षतिग्रस्त होंगे ।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) नि:संदेह जो लोग ईमान लाये तथा उन्होंने कार्य भी पुण्य के किये तथा अपने पालनहार की ओर झुकते रहे, वही स्वर्ग में जाने वाले हैं, जहाँ वे सदैव रहने वाले हैं ।

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ

(२४) इन दोनों गुटों का उदाहरण अंधे-बहरे तथा देखने-सुनने वाले जैसा है ।[2] क्या यह

---

[1]अर्थात उनका सत्य से मुख मोड़ना तथा द्वेष उस चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था कि ये उसे देखने तथा सुनने की शक्ति नहीं रखते थे । अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह ने उनको कान तथा आँखें तो दी थीं परन्तु उन्होंने उनसे सत्य बात न सुनी, न देखी । अर्थात

﴿ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُم مِّن شَيْءٍ ﴾

"न उनके कानों ने उन्हें कोई लाभ पहुँचाया, न उनकी आँखों तथा दिलों ने । क्योंकि सत्य सुनने से बहरे तथा सत्य देखने से अंधे बने रहे ।" (सूर: *अल-अहक़ाफ-२६*)

जिस प्रकार कि वह नरक में प्रवेश करते हुए कहेंगे ।

﴿ لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴾

"यदि हम सुनते तथा समझ से काम लेते तो आज नरक में न जाते ।"(सूर: *अल-मुल्क*-१०)

[2]पूर्व की आयतों में ईमान वालों, काफ़िरों तथा भाग्यवानों एवं हतभागों दोनों का वर्णन किया गया है । अब इस में दोनों की अवस्था का वर्णन करके दोनों की वास्तविकता को स्पष्ट किया जा रहा है । कहा, एक का उदाहरण अंधे तथा बहरे की तरह है तथा दूसरे

يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

दोनों तुलना में समान हैं ? क्या फिर भी तुम शिक्षा प्राप्त नहीं करते ?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ إِنِّى لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा निःसंदेह हमने नूह (अलैहिस्सलाम) को उसके समुदाय की ओर रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा कि मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से सचेत कर देने वाला हूँ।

أَن لَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا ٱللَّهَ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾

(२६) कि तुम केवल अल्लाह की इबादत ही किया करो,[1] मुझे तो तुम पर दुखदायी दिन

की तुलना देखने तथा सुनने वाले की तरह है। काफ़िर दुनियाँ में सत्य का सौंदर्य देखने से वंचित तथा आख़िरत (परलोक) में मोक्ष के मार्ग से दूर, उसी प्रकार सत्य का तर्क सुनने से वंचित रहता है, इसीलिये ऐसी बातों से वंचित रहता है, जो उसके लिये लाभकारी हों। इसके विपरीत ईमानवाले, समझदार, सत्यदर्शी तथा सत्य तथा अनृत (असत्य) के मध्य विवेककारी होते हैं। अतः वह सत्य तथा पुण्य का अनुसरण करते हैं, तर्क को सुनते हैं तथा उसके द्वारा शंका का निवारण करते तथा अनृत से दूर रहते हैं। क्या ये दोनों समान हो सकते हैं ? प्रश्न नकारने के लिये है। अर्थात दोनों समान नहीं हो सकते। जैसे अन्य स्थान पर कहा गया है :

﴿ لَا يَسْتَوِىٓ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ وَأَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ ۚ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ﴾

"स्वर्ग में जाने वाले तथा नरक में जाने वाले समान नहीं हो सकते, स्वर्ग में तो जाने वाले सफल होने वाले हैं।" (सूरः *अल-हश्र*-२०)

एक अन्य स्थान पर इसे इस प्रकार वर्णित किया गया है,

"अंधा तथा आँख वाला समान नहीं। अंधकार तथा प्रकाश, छाया तथा धूप समान नहीं, जीवित तथा मृत समान नहीं।" (सूरः *फ़ातिर*-१९ से २२)

[1]यह वही एकेश्वरवाद का आमंत्रण है जो प्रत्येक नबी ने आकर अपने-अपने समुदाय को दिया। जिस प्रकार कहा :

﴿ وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِىٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ ﴾

"जो पैग़म्बर हमनें आप से पूर्व भेजे, उनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) की कि मेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, बस मेरी ही इबादत करो।"(सूरः *अल-अम्बिया*-२५)

की यातना का भय है ।[1]

(२७) उसके समुदाये के काफ़िरों के मुखियाओं ने उत्तर दिया कि हम तो तुझे अपने समान मनुष्य ही देखते हैं,[2] तथा तेरे अनुयायी को भी देखते हैं कि स्पष्ट रूप से सिवाय नीच[3] लोगों के[4] अन्य कोई नहीं (जो तुम्हारा अनुसरण कर

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ

[1]अर्थात यदि मुझ पर ईमान नहीं लाये तथा उस एकेश्वरवाद के आमन्त्रण को नहीं स्वीकार किया तो अल्लाह की यातना से नहीं बच सकोगे ।

[2]यह वही संदेह है जिसकी व्याख्या कई स्थानों पर की जा चुकी है कि काफ़िरों के निकट मानवता के साथ नबूअत तथा रिसालत का संयोग बड़ा विचित्र था, जिस प्रकार आजकल धार्मिक आधुनिकीकरण करने वालों को भी विचित्र लगता है तथा वे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मानव होने का इंकार करते हैं ।

[3]सत्य के इतिहास में यह बात भी हर काल में सामने आती रही है कि प्रारम्भ में इस को अपनाने वाले सदैव वे लोग होते हैं जिन्हें समाज में हीन तथा निर्बल समझा जाता था तथा धनवान तथा वैभवशाली गुट इससे वंचित रहता । यहाँ तक कि ये चीज़ पैग़म्बरों के अनुयायियों का लक्षण बन गई । अतः जब रोम के बादशाह हरकुलस ने आदरणीय अबू सुफ़ियान (जो अभी तक ईमान नहीं लाये थे) से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में बात पूछी तो उस में उनसे एक बात यह भी पूछी कि उसके अनुयायियों में समाज के सम्मानित व्यक्ति हैं अथवा कमज़ोर लोग ? तो आदरणीय सुफ़ियान ने उत्तर में कहा, "कमज़ोर लोग" जिस पर हरकुलस ने कहा "रसूलों के अनुयायी यही लोग होते हैं ।" (सहीह बुख़ारी हदीस संख्या-७) क़ुरआन करीम में भी स्पष्टीकरण किया गया है कि सामर्थ्यवान लोग ही सर्वप्रथम पैग़म्बरों को झुठलाते रहे हैं । (सूरः ज़ुखरूफ़-२३) तथा यह ईमान वालों की सांसारिक परिस्थिति थी जिसके कारण काफ़िर लोग उन्हें हीन समझते थे, वरन् वास्तविकता तो यह है कि सत्य के अनुयायी सम्मानित तथा प्रतिष्ठित हैं, चाहे वह धन-सम्पत्ति में कम हों तथा सत्य के निर्वती नीच तथा निरादर हैं चाहे वे सांसारिक रूप से धनवान ही हों ।

[4]ईमान वाले चूँकि अल्लाह तथा रसूल के आदेशों के सापेक्ष अपनी बुद्धि तथा विचार एवं तर्क का प्रयोग नहीं करते, इसलिये असत्य के अनुयायी यह समझते हैं कि यह मोटी बुद्धि वाले हैं कि अल्लाह का रसूल इन्हें जिस ओर मोड़ देता है, ये मुड़ जाते हैं, जिस चीज़ से रोक देता है, रूक जाते हैं । यह भी ईमान वालों की बड़ी विशेषता है, बल्कि ईमान की आवश्यक माँग है । परन्तु काफ़िरों तथा असत्यवादियों के निकट यह विशेषता भी 'दोष' है ।

وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ۝٢٧

रहे हैं) हम तो तुम्हारी किसी प्रकार की श्रेष्ठता अपने ऊपर नहीं देख रहे, बल्कि हम तो तुझे झूठा समझ रहे हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ۝٢٨

(२८) नूह ने कहा, ऐ मेरे समुदाय वालो ! मुझे बताओ तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से मिली निशानी पर हुआ तथा मुझे उसने अपने पास की (कोई उत्तम) कृपा प्रदान की हो,[1] फिर वह तुम्हारी आँखों में न समाई,[2] तो क्या बलपूर्वक उसे तुम्हारे गले में डाल दूँ जबकि तुम उसे नहीं चाहते हो।[3]

وَيٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ۝٢٩

(२९) हे मेरे समुदाय वालो ! मैं इसके बदले तुम से कोई धन नहीं माँगता।[4] मेरा प्रतिकार तो केवल अल्लाह तआला के पास है। न मैं ईमानवालों को अपने पास से निकाल सकता हूँ,[5] उन्हें अपने प्रभु से मिलना है, परन्तु मैं

---

[1] بينة से तात्पर्य ईमान तथा विश्वास है तथा कृपा से नबूअत। जिस से अल्लाह तआला ने नूह को विभूषित किया था।

[2]अर्थात तुम उसको देखने से अंधे हो गये। अत: तुमने उसका आदर किया न अपनाने के लिये तैयार हुए, अपितु उसको झुठलाने तथा खण्डन करने में लग गये।

[3]जब यह बात है तो सत्य का प्रदर्शन तथा कृपा तुम्हारे भाग्य में किस प्रकार आ सकती है ?

[4]ताकि तुम्हारे मन में यह शंका न उत्पन्न हो जाये कि इस नबूअत के दावे से उसका उद्देश्य सांसारिक धन एकत्रित करना है। मैं तो यह कार्य केवल अल्लाह के आदेश से तथा उसकी प्रसन्नता के लिये कर रहा हूँ, वही मुझे इस का बदला अर्थात फल देगा।

[5]इस से ज्ञात होता है कि नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के प्रमुखों ने भी समाज में कमज़ोर समझे जाने वाले ईमान वालों को आदरणीय नूह से अपनी सभा अथवा अपनी निकटता से दूर करने की माँग की होगी, जिस प्रकार मक्का के सरदारों ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस प्रकार की माँग की थी, जिस पर अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम की यह आयतें उतारी थी।

देखता हूँ कि तुम लोग मूर्खता कर रहे हो ।[1]

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝

(३०) तथा ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! यदि मैं ईमान वालों को अपने पास से निकाल दूँ, तो अल्लाह की तुलना में मेरी सहायता कौन कर सकता है ।[2] क्या तुम कुछ भी सोच-विचार नहीं करते ?

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ښ

(३१) तथा मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोष हैं, (सुनो) मैं परोक्ष का ज्ञान भी नहीं रखता, न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, न मेरा यह कथन है कि जिन पर तुम्हारी दृष्टि अपमान से पड़ रही है उन्हें अल्लाह (तआला) कोई उत्तम वस्तु देगा ही

﴿ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ ﴾

"हे पैग़म्बर ! उन लोगों को अपने से दूर मत करना जो प्रात: तथा सायं अपने प्रभु को पुकारते हैं ।" (सूर: *अल-अनाम*-५२)

﴿ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ﴾

"अपने आप को उन लोगों के साथ जोड़े रखिये जो अपने प्रभु को प्रात: एवं सायं पुकारते हैं, अपने प्रभु की प्रसन्नता चाहते हैं, आपकी आँखें उनसे हट कर किसी अन्य की ओर न जायें ।" (सूर: *अल-कहफ़*-२८)

[1]अर्थात अल्लाह तथा रसूल के अनुयायियों को तुच्छ समझना तथा फिर उन्हें नबी की निकटता से दूर करने की माँग करना, यह तुम्हारी मूर्खता है । ये लोग तो इस योग्य हैं कि उन्हें सिर-आँखें पर बिठाया जाये न कि दूर से धिक्कारा जाये ।

[2]अर्थात ऐसे लोगों को अपने से दूर करना, अल्लाह के क्रोध तथा अप्रसन्नता का कारण है ।

إِنِّيٓ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ٣١

नहीं ।[1] उनके दिल में जो कुछ है अल्लाह भली-भाँति जानता है, यदि मैं ऐसा कहूँ तो निःसंदेह मेरी भी गणना अत्याचारियों में हो जायेगी ।[2]

قَالُواْ يَٰنُوحُ قَدۡ جَٰدَلۡتَنَا فَأَكۡثَرۡتَ جِدَٰلَنَا فَأۡتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ٣٢

(३२) (समुदाय के लोगों ने) कहा : ऐ नूह ! तू हम से विवाद तथा अत्यधिक विवाद कर चुका ।[3] अब तो तू जिस चीज़ से हमें डरा रहा है, वही हमारे पास ले आ यदि तू सच्चा है ।[4]

قَالَ إِنَّمَا يَأۡتِيكُم بِهِ ٱللَّهُ إِن شَآءَ وَمَآ أَنتُم بِمُعۡجِزِينَ ٣٣

(३३) उत्तर दिया कि उसे भी अल्लाह (तआला) ही लायेगा यदि वह चाहे तथा हाँ, तुम उसे विवश नहीं कर सकते ।[5]

وَلَا يَنفَعُكُمۡ نُصۡحِيٓ إِنۡ أَرَدتُّ أَنۡ أَنصَحَ لَكُمۡ إِن كَانَ ٱللَّهُ

(३४) तुम्हें मेरी शुभचिन्ता कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकती, चाहे मैं जितना ही

---

[1]बल्कि अल्लाह तआला ने तो उन्हें ईमान के रूप में सर्वश्रेष्ठ पुण्य प्रदान कर रखा है तथा जिसके आधार पर वे आख़िरत (परलोक) में भी स्वर्ग की सुख-सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा दुनिया में भी यदि अल्लाह तआला चाहेगा तो उच्च पद प्रदान करेगा । अर्थात तुम्हारा इन को तुच्छ समझना इन के लिये हानिकारक नहीं है, परन्तु तुम ही अल्लाह के समक्ष अपराधी होगे कि अल्लाह के पुनीत भक्तों को जिनको अल्लाह के दरबार में उच्च स्थान प्राप्त है, तुम नीच तथा अछूत समझते हो ।

[2]क्योंकि मैं उन के विषय में ऐसी बात कहूँ जिसका मुझे ज्ञान नहीं, केवल अल्लाह जानता है, तो यह अत्याचार है ।

[3]परन्तु इसके उपरान्त हम ईमान नहीं लाये ।

[4]यह वही मूर्खता है जिस को भटके हुए समुदाय करते आये हैं कि वे अपने पैग़म्बर से कहते रहे यदि तू सच्चा है तो हम पर प्रकोप उतारकर हमें नष्ट करवा दे । यदि उन में बुद्धि होती तो वे कहते कि यदि तू सच्चा है तथा वास्तव में अल्लाह का रसूल है, तो हमारे लिये भी दुआ कर कि अल्लाह तआला हमारे हृदय भी खोल दे ताकि हम इसे अपना लें ।

[5]अर्थात प्रकोप का आना पूर्णरूप से अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, यह नहीं कि जब मैं चाहूँ तुम पर प्रकोप आ जाये । परन्तु जब अल्लाह प्रकोप का निर्णय कर लेगा अथवा भेज देगा, तो फिर उस को रोकने वाला कोई नहीं है ।

يُرِيدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾

तुम्हारा शुभचिंतक क्यों न हूँ, यदि अल्लाह की इच्छा तुम्हें भटकाने की हो।[1] वही तुम सब का प्रभु है[2] तथा उसी की ओर लौट कर जाओगे।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾

(३५) क्या ये कहते हैं कि उसे स्वयं उसी ने गढ़ लिया है? तो उत्तर दो कि यदि मैंने उसे गढ़ लिया हो तो मेरा पाप मुझ पर है तथा मैं उन पापों से अलग हूँ। जिनको तुम कर रहे हो।[3]

وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا

(३६) तथा नूह की ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी गयी कि तेरे समुदाय में जो भी ईमान ला

---

[1] إِغْـــواء शब्द اضلال शब्द के अर्थों में प्रयोग हुआ है, जिस का अर्थ है "गुमराह करना"। अर्थात तुम्हारा कुफ़ तथा झुठलाना यदि उस स्थान तक पहुँच चुका है, जहाँ से किसी व्यक्ति का पलटना तथा प्रकाश प्राप्त करना असंभव है, तो उसी अवस्था को अल्लाह तआला की ओर से 'मोहर लगा देना' कहा जाता है, जिस के पश्चात् मार्गदर्शन प्राप्त करने की कोई आशा शेष नहीं रह जाती है। अर्थ यह है कि यदि तुम भी उस भयानक मोड़ तक पहुँच चुके हो, तो फिर तुम्हारी भलाई करना चाहूँ अर्थात मार्ग पर लाने की और अधिक प्रयत्न करूँ, तो यह प्रयत्न तथा भलाई तुम्हारे लिये लाभकारी नहीं, क्योंकि तुम भटकावे की अन्तिम चरम सीमा पर पहुँच चुके हो।

[2] मार्गदर्शन तथा भटकाना भी उसी के हाथ में है तथा तुम्हें उसी की ओर पलट कर जाना है, जहाँ वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों का बदला देगा। पुनीत कार्य करने वालों को प्रतिफल तथा बुरों को बुराई का दण्ड देगा।

[3] कुछ व्याख्याकारों के निकट यह वार्तालाप नूह के समुदाय के लोगों तथा आदरणीय नूह के मध्य हुई तथा कुछ के विचार से यह प्रासंगिक वाक्य के रूप में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मक्का के मूर्तिपूजकों के मध्य होने वाली वार्तालाप है। अर्थ यह है कि यदि यह क़ुरआन मेरा गढ़ा हुआ है तथा मैं अल्लाह की ओर सम्बन्धित करने में झूठा हूँ, तो यह मेरा अपराध है, इस का दण्ड मैं ही भोगूंगा। परन्तु तुम जो कर रहे हो, जिस से मैं असम्बन्धित हूँ, उस का भी तुम्हें पता है? इसका दुष्परिणाम तो मुझ पर नहीं, तुम पर ही पड़ेगा, उस की भी तुम्हें कुछ चिन्ता है।

تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

चुके उन के सिवाय अब कोई ईमान लायेगा ही नहीं, फिर तो उनके कर्मों पर दुखी न हो।[1]

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾

(३७) तथा एक नाव हमारी आँखों के सामने तथा हमारी वह्यी (प्रकाशना) से तैयार कर[2] तथा अत्याचारियों के विषय में हमसे कोई बात न कर, वे पानी में डूबो दिये जाने वाले हैं।[3]

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا

(३८) वह (नूह) नाव बनाने लगे। उसके समुदाय के जो भी गुट के लोग उसके निकट से गुज़रते वे उसका उपहास उड़ाते।[4] वह कहते यदि तुम हमारा उपहास उड़ाते हो तो

---

[1]यह उस समय कहा गया जब नूह के समुदाय ने आपदा की माँग की तथा आदरणीय नूह ने अल्लाह से प्रार्थना की कि ऐ प्रभु ! धरती पर एक काफ़िर भी बसने वाला न रहने दे। अल्लाह ने फ़रमाया : अब अन्य कोई ईमान नहीं लायेगा, तू उन पर दुखी न हो।

[2]"हमारी आँखों के समक्ष" का अर्थ है "हमारी देख-भाल में " परन्तु यह आयत अल्लाह तआला के लिये आँख होने के गुण को बताती है जिस पर आस्था अनिवार्य है। तथा "हमारी वह्यी (प्रकाशना) से" का अर्थ उसकी लम्बाई-चौड़ाई आदि की जो अवस्था हम ने बतलायी है, उस प्रकार उसे बना। इस स्थान पर कुछ व्याख्याकारों ने नाव की लम्बाई-चौड़ाई, उस के तलों तथा किस प्रकार की लकड़ी तथा अन्य सामान उस में प्रयोग किया गया, उस का विस्तृत वर्णन किया है, जो स्पष्ट है, कि किसी प्रमाणिता पर आधारित नहीं है। उसका सही विस्तृत ज्ञान केवल अल्लाह ही को है।

[3]कुछ ने इस से तात्पर्य आदरणीय नूह के पुत्र तथा पत्नी को लिया है, जो ईमान नहीं लाये थे तथा डूबने वालों में से थे। कुछ ने इस से डूबने वाला सम्पूर्ण समुदाय लिया है तथा अर्थ यह है कि इन के लिये अवसर देने की माँग न करना क्योंकि अब उन के विनाश का समय आ गया है अथवा यह अर्थ है कि उन के विनाश के लिये शीघ्रता न करें, निर्धारित समय में यह सब डूब जायेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[4]उदाहरणार्थ कहते ऐ नूह ! नबूअत करते-करते अब बढ़ई का काम प्रारम्भ कर दिया। अथवा ऐ नूह ! थल में नाव किस लिये बना रहे हो ?

نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾

हम भी तुम पर एक दिन हँसेंगे जैसे तुम उपहास कर रहे हो।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तुम्हें अति शीघ्र ज्ञात हो जायेगा कि किस पर प्रकोप आना है, जो उसे अपमानित करे तथा उस पर स्थाई दण्ड[1] उतर जाये।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ

(४०) यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया तथा तन्दूर उबलने लगा।[2] हम ने कहा कि इस नाव में हर प्रकार के जोड़े दोहरे सवार करा ले।[3] तथा अपने घर के लोगों को भी, सिवाय उनके जिन पर पूर्व से बात पड़ चुकी है।[4] तथा

---

[1]इस से तात्पर्य नरक की स्थाई यातना है, जो सांसारिक प्रकोप के पश्चात उन के लिये तैयार है।

[2]इस से कुछ ने रोटी पकाने वाला तन्दूर, कुछ ने निर्धारित स्थान जैसे ऐनुलवर्द: तथा कुछ ने धरती का तल लिया है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी अन्तिम अर्थ को प्राथमिकता दी है अर्थात सम्पूर्ण धरती स्रोतों की तरह उबल पड़ी, ऊपर से आकाश की वर्षा ने शेष बची कमी को पूर्ण कर दिया।

[3]इससे तात्पर्य स्त्री तथा पुरूष अर्थात नर तथा मादा है। इस प्रकार प्रत्येक जीवधारी का युगल नाव में रख लिया गया तथा कुछ कहते हैं कि वनस्पति भी रखी गयी थी।

[4]अर्थात जिनको डूबना अल्लाह के लिखे हुए भाग्य के अनुरुप है। इस से तात्पर्य सामान्य काफ़िर हैं अथवा यह नष्ट होने वालों के अतिरिक्त से हैं अर्थात अपने घर वालों को भी नाव में सवार करा लें अतिरिक्त उन के जिन पर अल्लाह की बात स्पष्ट कर दी गयी है अर्थात एक पुत्र (कन्आन अथवा (याम) तथा आदरणीय नूह की पत्नी (वायल:) ये दोनों काफ़िर थे, इन को नाव में बिठाने से निषिद्ध कर दिया गया।

وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝

सभी ईमान वालों को भी,[1] उसके साथ ईमान लाने वाले बहुत ही कम थे ।[2]

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ۭ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

(४१) तथा नूह ने कहा कि इस नाव में बैठ जाओ अल्लाह ही के नाम से इसका चलना तथा ठहरना है,[3] निःसंदेह मेरा पालनहार अत्यधिक क्षमाशील एवं अत्यधिक कृपालु है ।

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۣ وَنَادٰي نُوْحُۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ

(४२) तथा वह नाव उन्हें पर्वतों जैसी लहरों में लेकर जा रही थी ।[4] तथा नूह ने अपने पुत्र

---

[1]अर्थात सब ईमानवालों को नाव में सवार करा ले ।

[2]कुछ ने उनकी संख्या (स्त्री तथा पुरूष सहित) ८० तथा कुछ ने इस से भी कम बतायी है । इन में आदरणीय नूह के तीन पुत्र जो ईमान लाने वालों में सम्मिलित थे । साम, हाम, तथा याफ़िस तथा उनकी पत्नियाँ तथा चौथी पत्नी याम की थी, जो काफ़िर था परन्तु उसकी पत्नी मुसलमान होने के कारण नाव में सवार थी ।

[3]अर्थात अल्लाह ही के नाम से उसका जल की सतह पर चलना तथा उसी के नाम पर रूकना है । इससे एक उद्देश्य ईमान वालों को सांत्वना देना तथा साहस देना था कि किसी प्रकार के भय के बिना नाव में सवार हो जाओ, अल्लाह ही इस नाव का रक्षक तथा निरीक्षक है, उसी के आदेश से चलेगी तथा उसी के आदेश से ठहरेगी । जिस प्रकार अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया : कि ऐ नूह ! जब तुम तथा तेरे साथी नाव में आराम से बैठ जायें तो कहो -

﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴾

"सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें अत्याचारी लोगों से मोक्ष प्रदान किया तथा कहो कि हे मेरे प्रभु ! मुझे सुरक्षित उतारना, तू ही उत्तम उतारने वाला है ।" (*सूरः अल-मोमिनून-२८,२९*)

कुछ आलिमों ने नाव तथा सवारी में बैठते समय بسم الله مجريها و مُرسٰها का पढ़ना उचित माना है । परन्तु हदीस से ﴿ سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۝ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴾ का पढ़ना सिद्ध है ।

[4]अर्थात जब धरती पर पानी था, यहाँ तक कि पर्वत भी डूबे हुए थे यह नाव आदरणीय नूह तथा उनके साथियों को अपने अंदर सुरक्षित लिये अल्लाह के आदेश से तथा उस की

مَعۡزِلٍ يَّٰبُنَيَّ ٱرۡكَب مَّعَنَا وَلَا تَكُن مَّعَ ٱلۡكَٰفِرِينَ ۝٤٢

को जो एक किनारे पर था पुकार कर कहा, ऐ मेरे प्यारे बच्चे ! हमारे साथ सवार हो जा तथा काफ़िरों में सम्मिलित न रह ।[1]

قَالَ سَـَٔاوِيٓ إِلَىٰ جَبَلٖ يَعۡصِمُنِي مِنَ ٱلۡمَآءِۚ قَالَ لَا عَاصِمَ ٱلۡيَوۡمَ مِنۡ أَمۡرِ ٱللَّهِ إِلَّا مَن رَّحِمَۚ وَحَالَ بَيۡنَهُمَا ٱلۡمَوۡجُ فَكَانَ مِنَ ٱلۡمُغۡرَقِينَ ۝٤٣

(४३) उसने उत्तर दिया कि मैं तो किसी ऊँचे पर्वत की शरण में आ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा ।[2] नूह ने कहा आज अल्लाह के आदेश से बचाने वाला कोई नहीं वही केवल बचेंगे जिन पर अल्लाह की कृपा हुई । उसी समय उनके मध्य लहर आ गयी तथा वह डूबने वालों में हो गया ।[3]

وَقِيلَ يَٰٓأَرۡضُ ٱبۡلَعِي مَآءَكِ وَيَٰسَمَآءُ أَقۡلِعِي وَغِيضَ ٱلۡمَآءُ وَقُضِيَ

(४४) तथा कह दिया गया कि ऐ धरती ! अपने पानी को निगल जा,[4] तथा ऐ आकाश ! बस

सुरक्षा में पर्वत की भाँति चल रही थी । वरन् इतने तूफ़ान वाले पानी में नाव का क्या महत्व होता है ? इसीलिये अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने इसे अभार के रूप में वर्णन किया है ।

﴿ إِنَّا لَمَّا طَغَا ٱلۡمَآءُ حَمَلۡنَٰكُمۡ فِي ٱلۡجَارِيَةِ ۝ لِنَجۡعَلَهَا لَكُمۡ تَذۡكِرَةٗ وَتَعِيَهَآ أُذُنٞ وَٰعِيَةٞ ﴾

"जब पानी में बाढ़ आ गई तो उस समय हमने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया, ताकि उसे तुम्हारे लिये शिक्षाप्रद और यादगार बना दें तथा याद रखने वाले कान उसे याद रखें ।" (*सूरः अल-हाक़्क़ः*-११,१२)

[1]यह आदरणीय नूह का चौथा पुत्र था जिस की उपाधि 'कन्आन' तथा नाम 'याम' था, उस से आदरणीय नूह ने निवेदन किया कि मुसलमान हो जा, तथा काफ़िरों के साथ सम्मिलित होकर डूबने वालों में न हो ।

[2]उस का विचार था कि किसी ऊंचे पर्वत की शिखर पर चढ़कर मैं शरण ले लूँगा, वहाँ पानी कैसे पहुँचेगा ?

[3]पिता-पुत्र के मध्य यह वार्ता हो ही रही थी कि एक तूफ़ानी धारा ने उसे अपने लपेट में ले लिया ।

[4]निगलने का प्रयोग पशु के लिये होता है कि वह अपने मुख का कौर निगल जाता है । यहाँ पानी के सूखने को निगल जाने से तुलना करने में इस मार्मिकता का ज्ञान होता है कि पानी धार-धार नहीं सूखा, अपितु अल्लाह तआला के आदेश से धरती ने तत्क्षण अपने अंदर सारा पानी इस प्रकार निगल लिया जिस प्रकार पशु कौर निगल जाता है ।

الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

कर थम जा, उसी समय पानी सुखा दिया गया तथा कार्य पूर्ण कर दिया गया।[1] तथा नाव जूदी नामक पर्वत[2] पर जा लगी, तथा कहा गया कि अन्याय करने वालों पर धिक्कार उतरे।[3]

وَنَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ

(४५) तथा नूह ने अपने प्रभु को पुकारा तथा कहा कि ऐ मेरे प्रभु ! मेरा पुत्र तो मेरे परिवार वालों मे से है। नि:संदेह तेरा वायदा पूर्णरूप से सत्य है तथा तू सभी अधिपतियों से श्रेष्ठ अधिपति है।[4]

قَالَ يَا نُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِ

(४६) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया ऐ नूह ! नि:संदेह वह तेरे परिवार से नहीं है,[5] उसके कर्म बिल्कुल अप्रिय हैं,[6] तुझे कदापि वह

---

[1]अर्थात सभी काफ़िरों को डूबो दिया गया।

[2]जूदी पर्वत का नाम है, जो कुछ लोगों के कथनानुसार ईराक के नगर मूसल के निकट है, आदरणीय नूह का समुदाय भी इसी के निकट आबाद था।

[3] بعد यह विनाश तथा अल्लाह के धिक्कार के अर्थ में प्रयोग हुआ है तथा क़ुरआन करीम में विशेष रूप से अल्लाह के क्रोध का कारण बनने वाले समुदायों के लिये कई स्थान पर प्रयोग हुआ है।

[4]आदरणीय नूह ने संभवत: अपने पिता प्रेम की भावना से प्रेरित होकर अल्लाह के दरबार में प्रार्थना की तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि उन्हें यह सम्भावना थी कि संभवत: यह मुसलमान हो जायेगा, इसलिये उस के विषय में यह प्रार्थना की।

[5]आदरणीय नूह ने अपनी वंशीय निकटता के कारण उसे अपना पुत्र कहा था। परन्तु अल्लाह तआला ने ईमान के आधार पर धर्म की निकटता के नियमानुसार इस बात को नकारा कि वह तेरे परिवार से है इसलिए कि एक नबी का मूल परिवार तो वही है जो उस पर ईमान लाये, चाहे वह कोई भी हो। तथा यदि ईमान न लाये, तो चाहे वह नबी का पिता हो, पुत्र हो, अथवा पत्नी। वह नबी के परिवार का सदस्य नहीं।

[6]यह अल्लाह तआला ने उसके कारण का वर्णन किया है। इस से ज्ञात हुआ कि जिस के पास ईमान तथा पुण्य कर्म नहीं होगा, उसे अल्लाह की यातना से अल्लाह का पैग़म्बर

مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۖ إِنِّي أَعِظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝

वस्तु नहीं मांगनी चाहिये जिसका तुझे तनिक भी ज्ञान न हो,[1] मैं तुझे शिक्षा देता हूँ कि तू अशिक्षितों में से अपनी गणना कराने से रूक जा ।[2]

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۖ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُن مِّنَ الْخَاسِرِينَ ۝

(४७) नूह ने कहा ऐ मेरे प्रभु ! मैं तेरी ही शरण चाहता हूँ, इस बात से कि तुझसे वह माँगू जिसका मुझे ज्ञान ही न हो । यदि तू मुझे क्षमा नहीं करेगा तथा तू मुझ पर दया न करेगा तो मैं हानि उठाने वालों में हो जाऊँगा ।[3]

قِيلَ يَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّن مَّعَكَ ۚ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ

(४८) कहा गया कि हे नूह ! हमारी ओर से सुरक्षा तथा उन विभूतियों के साथ उतर[4] जो तुझ पर है तथा तेरे साथ के बहुत से समुदायों पर ।[5] तथा बहुत से वे समुदाय होंगे जिन्हें

भी बचाने का सामर्थ्य नहीं रखता । आजकल लोग पीरों, फ़कीरों तथा गद्दी नशीनों (पुजारियों) से सम्बन्ध होने को ही मोक्ष के लिये पर्याप्त मानते हैं तथा पुण्य के कार्य करने की आवश्यकता नहीं समझते । यद्यपि जब पुण्य के कार्य के बिना नबी के साथ वंशीय सम्बंध भी काम नहीं आता, तो ये सम्बंध क्या काम आयेंगे ?

[1] इससे ज्ञात हुआ कि नबी को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, उसको उतना ही ज्ञान होता है, जितना वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला उसे प्रदान करता है । यदि आदरणीय नूह को पूर्व ज्ञान होता कि उनकी प्रार्थना स्वीकार न होगी, तो नि:संदेह वह उस से बचते ।

[2] यह अल्लाह तआला की ओर से आदरणीय नूह को शिक्षा है, जिसका उद्देश्य उन को उस उच्च स्थान पर आसीन करना है, जो कर्मी ज्ञानियों के लिये अल्लाह के सदन में है ।

[3] जब आदरणीय नूह यह जान गये कि उनका प्रश्न घटना के अनुसार नहीं था, तो तुरन्त उससे क्षमा माँग ली तथा अल्लाह तआला की कृपा तथा दया के प्रार्थी हो गये ।

[4] यह उतरना नाव से अथवा उस पर्वत से है, जिस पर नाव जा कर ठहर गयी थी ।

[5] इससे तात्पर्य वह गुट हैं जो आदरणीय नूह के साथ नाव में सवार थे अथवा भविष्य में होने वाले वे गुट हैं जो उनके वंश से होने वाले थे । अगले वाक्य के अनुसार यही दूसरा भावार्थ अधिक उचित है ।

يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾

हम लाभ तो अवश्य पहुँचायेंगे, परन्तु फिर उन्हें हमारी ओर से दुखदायी यातना भी पहुँचेगी ।[1]

تِلْكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَاصْبِرْ ۖ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) यह समाचार परोक्ष के समाचारों में से है जिनकी वह्यी (प्रकाशना) हम आप की ओर करते हैं, इन्हें इससे पूर्व न आप जानते थे तथा न आप का सुमदाय [2] इसलिये आप धैर्य धारण करें विश्वास कीजिये कि परिणाम संयमियों के लिये ही है ।[3]

---

[1]ये वह गुट हैं जो नाव में बच जाने वालों के वंश से क़ियामत (प्रलय) तक होंगे । अर्थ यह है कि उन काफ़िरों को दुनियाँ का क्षणिक जीवन व्यतीत करने के लिये हम दुनियाँ की सुख-सुविधा अवश्य देंगे परन्तु वे अन्त में दुखदायी यातना भी भोगेंगे ।

[2]यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सम्बोधन है तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से परोक्ष ज्ञान को नकारा जा रहा है कि यह परोक्ष की बातें हैं जिनसे हम आपको सूचित कर रहे हैं, वरन् आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा आप का समुदाय उनसे अनभिज्ञ था ।

[3]अर्थात आप का समुदाय जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को झुठला रहा है तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को दुख पहुँचा रहा है, उस पर धैर्य से काम लें, इसलिये कि हम आप की सहायता करने वाले हैं, तथा सुपरिणाम आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों के लिये ही है, जो संयम के गुण से युक्त हैं । (आक़िबत) संसार तथा परलोक के सुफल को कहते हैं । इस में अल्लाह से डरने वालों के लिये शुभ सूचना है कि प्रारम्भ में उन्हें चाहे कितने भी कठिनाईयों का सामना करना पड़े, परन्तु अल्लाह तआला की सहायता एवं सुफल के वही अधिकारी हैं । जिस प्रकार से अन्य स्थान पर कहा :

﴿ إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴾

"अवश्य हम अपने रसूलों की और विश्वास करने वालों की सहायता इस लोक के जीवन में भी करेंगे तथा उस दिन भी जब साक्षी लोग खड़े होंगे ।" (सूर: *अल-मोमिन,* ५१)

﴿ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ۞ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنصُورُونَ ۞ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴾

"हमारा वादा पहले ही अपने रसूलों के लिए हो चुका है कि वह सफल होंगे तथा हमारी सेना ही विजेता रहेगी ।" (सूर: *अल-साफ़्फ़ात,*१७१ से १७३)

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥٓ ۖ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा आद समुदाय की ओर उनके भाई हूद को हमने भेजा,[1] उसने कहा मेरे समुदाय के लोगो ! अल्लाह ही की इबादत करो, उस के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, तुम तो केवल आक्षेप लगा रहे हो ।[2]

يَٰقَوْمِ لَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى ٱلَّذِى فَطَرَنِىٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

(५१) मेरे समुदाय के लोगो ! मैं तुम से इस का कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, मेरा बदला उसके ऊपर है जिसने मुझे पैदा किया है, तो क्या फिर भी तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ।[3]

وَيَٰقَوْمِ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا۟ مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अपने प्रभु से अपने पापों की क्षमा माँगो तथा उसके सदन में तौबा करो ताकि वह वर्षा वाले बादल तुम पर भेज दे तथा तुम्हारी शक्ति में और वृद्धि करे,[4] तथा तुम

---

[1]भाई से तात्पर्य उन्हीं के समुदाय का एक सदस्य ।

[2]अर्थात अल्लाह के साथ अन्यों को साझीदार ठहरा कर तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हो ।

[3]तथा ये नहीं समझते कि जो बिना पारिश्रमिक तथा लालच के तुम्हें अल्लाह की ओर बुला रहा है, वह तुम्हारा शुभचिन्तक है । आयत में يا قوم से आह्वान की एक विधि का ज्ञान होता है, अर्थात हे काफ़िरो, हे मूर्तिपूजको कहने के स्थान पर हे मेरे समुदाय से सम्बोधित किया गया है ।

[4]आदरणीय हूद ने क्षमा-याचना की शिक्षा अपने वर्ग अर्थात अपने समुदाय को दी तथा उसके वे लाभ बताये, जो क्षमा-याचना करने वाली जाति को प्राप्त होते हैं । जिस प्रकार से क़ुरआन करीम में अन्य स्थानों पर ये लाभ वर्णित किये गये हैं (देखिये सूर: नूह-११) तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है :

« مَنْ لَزِمَ الْاِسْتِغْفَارَ جَعَلَ اللهُ لَهُ مِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجًا، وَمِنْ كُلِّ ضِيقٍ مَخْرَجًا، وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لاَ يَحْتَسِبُ »

पापी होकर मुख न मोड़ो ।[1]

(५३) (उन्होंने कहा) हे हूद ! तू हमारे पास कोई लक्षण तो लाया नहीं तथा हम केवल तेरे कहने से अपने देवताओं को छोड़ने वाले नहीं तथा न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं ।[2]

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٣

(५४) अपितु हम तो यही कहते हैं कि तू हमारे किसी देवता के बुरे झपेटे में आ गया है ।[3]उसने उत्तर दिया कि मैं अल्लाह को साक्षी बनाता हूँ तथा तुम भी साक्षी रहो

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝٥٤

"जो निरन्तर क्षमा-याचना करता है, अल्लाह तआला उसे प्रत्येक चिन्ता से मुक्ति तथा प्रत्येक तंगी से निकलने का कोई मार्ग बना देता है तथा उसको जीविका ऐसे स्थान से देता है जो उसके विचार में भी नहीं होती ।"(अबू दाऊद किताबुल वित्र बाब फ़िल इस्तिग्फ़ार संख्या १५१८, तथा इब्ने माजः संख्या ३८१९)

[1]अर्थात मैं जो तुम्हें आमन्त्रण दे रहा हूँ, उससे मुख न फेरो तथा अपने इंकार पर अडिग न रहो। ऐसा करोगे तो अल्लाह के सदन में अपराधी तथा पापी बनकर प्रस्तुत होगे।

[2]एक नबी युक्तियों तथा तर्कों की पूरी शक्ति अपने साथ रखता है, परन्तु अंधों को वे दिखायी नहीं देते। हूद के समुदाय ने इसी दृढ़ता का प्रदर्शन करते हुए कहा कि हम बिना किसी तर्क के मात्र तेरे कहने पर अपने देवताओं को किस प्रकार छोड़ दें ?

[3]अर्थात तू जो हमारे देवताओं का अपमान तथा अनादर करता है कि वे कुछ नहीं कर सकते, लगता है कि हमारे देवताओं में से किसी ने इसी अनादर के कारण तुझे कुछ कर दिया है। तथा तू सनक गया है। जैसे आजकल के नाम के मुसलमान भी इसी प्रकार की शंकाओं के शिकार हैं, जब उन्हें कहा जाता है कि ये मृत व्यक्ति तथा महात्मा कुछ नहीं कर सकते, तो कहते हैं कि ये उन का अनादर है तथा भय है कि इस प्रकार के अपमान करने वालों को ध्वस्त कर दें।

कि मैं तो अल्लाह के अतिरिक्त उन सब से अलग हूँ, जिन्हें तुम साझीदार बना रहे हो ।[1]

مِن دُونِهِۦ فَكِيدُونِى جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ ﴿٥٥﴾

(५५) अच्छा तुम सब मिलकर मेरे विरूद्ध बुराई कर लो तथा मुझे कदापि अवसर भी न दो ।[2]

إِنِّى تَوَكَّلْتُ عَلَى ٱللَّهِ رَبِّى وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ ءَاخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَآ ۚ إِنَّ رَبِّى عَلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾

(५६) मेरा भरोसा केवल अल्लाह तआला पर ही है, जो मेरा प्रभु तथा तुम सब का प्रभु है, जितने भी चलने-फिरने वाले हैं सबका मस्तक वही थामे हुए है ।[3] निश्चय ही मेरा प्रभु बिल्कुल सीधे मार्ग पर है ।[4]

فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّآ أُرْسِلْتُ بِهِۦٓ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ

(५७) फिर भी तुम मुख फेरते हो तो फेरो, मैं तो तुम्हें वह सन्देश पहुँचा चुका, जो देकर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था ।[5] मेरा प्रभु तुम्हारे

---

[1] अर्थात मैं उन सभी मूर्तियों तथा देवताओं को नहीं मानता तथा तुम्हारा यह विश्वास कि उन्होंने मुझे कुछ कर दिया है, पूर्णरूप से अनुचित है, उनके अन्दर यह सामर्थ्य ही नहीं कि किसी को लाभ अथवा हानि पहुँचा सकें ।

[2] तथा यदि तम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं है, अपितु तुम अपने इस दावे में सच्चे हो कि ये मूर्तियाँ कुछ कर सकती हैं तो लो ! मैं उपस्थिति हूँ तुम तथा तुम्हारे देवता मिलकर मेरे विरूद्ध कुछ करके दिखाओ । और इस से नबी के उस शैली का बोध होता है कि वह कितना ज्ञानी होता है कि उसे अपने सत्य पर होने का विश्वास होता है ।

[3] अर्थात जिस शक्ति के हाथ में प्रत्येक वस्तु का अधिकार तथा नियन्त्रण है, वह वही शक्ति है, जो मेरा तथा तुम्हारा प्रभु है, मेरा भरोसा उसी पर है । उद्देश्य इन शब्दों से आदरणीय हूद अलैहिस्सलाम का यह है कि जिनको तुमने अल्लाह का साझीदार बना रखा है, उन पर भी अल्लाह ही का नियन्त्रण है, अल्लाह तआला उन के साथ जो चाहे कर सकता है, वे किसी का कुछ नहीं कर सकते ।

[4] अर्थात वह जो एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दे रहा है, नि:संदेह यह आमन्त्रण ही सीधा मार्ग है, इसी पर चलकर मोक्ष तथा सफलता प्राप्त की जा सकती है तथा इस सीधे मार्ग से फिरना तथा विचलित होना विनाश का कारण है ।

[5] अर्थात उसके पश्चात मेरा कर्तव्य समाप्त तथा तुम पर तर्क पूर्ण हो गया ।

رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾

स्थान पर अन्य लोगों को कर देगा तथा तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे,[1] नि:संदेह मेरा प्रभु हर वस्तु का रक्षक है।[2]

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जब हमारा आदेश आ पहुँचा, तो हम ने हूद को तथा उसके मुसलमान साथियों को अपनी विशेष कृपा से मुक्ति प्रदान की तथा हम ने उन सब को घोर (कड़ी) यातना से बचा लिया।[3]

وَتِلْكَ عَادٌ ۟ۙ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٥٩﴾

(५९) यह था आद का समुदाय, जिन्होंने अपने प्रभु की आयतों को नकार दिया तथा उसके रसूलों की अवज्ञा की[4] तथा प्रत्येक दुष्ट अवज्ञा-

---

[1]अर्थात तुम्हें नाश करके तुम्हारी भूमि तथा सम्पत्ति का दूसरों को स्वामी बना दे, तो वह ऐसा करने का सामर्थ्य रखता है तथा तुम उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। बल्कि वह अपनी इच्छा तथा विवेक के अनुसार ऐसा करता रहता है।

[2]नि:संदेह वह मुझे तुम्हारे धोखे तथा षड्यन्त्र से सुरक्षित भी रखेगा तथा शैतानी चालों से बचायेगा। इस के अतिरिक्त प्रत्येक अच्छे तथा बुरे को उनके कर्मों के अनुसार अच्छा-बुरा फल भी देगा।

[3]कड़ी यातना से तात्पर्य वही प्रचंड वायु का प्रकोप है, जिस के द्वारा आदरणीय हूद के समुदाय 'आद' को ध्वस्त कर दिया गया तथा जिस से आदरणीय हूद तथा उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया गया।

[4]'आद' की ओर केवल एक नबी आदरणीय हूद ही भेजे गये थे। परन्तु यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन्होंने रसूलों की अवज्ञा की। इस से या तो यह तात्पर्य हो कि एक रसूल को झुठलाना यह हुआ जैसे कि सभी को झुठलाया है। क्योंकि सभी रसूलों पर ईमान लाना अनिवार्य है। अथवा यह अर्थ है कि यह समाज अपने कुफ़्र तथा इंकार में इतनी बढ़ गयी थी कि यदि आदरणीय हूद के पश्चात कई रसूल भी भेजते तो यह समुदाय सब को झुठलाता। तथा इससे कदापि यह आशा नही थी कि वह किसी भी रसूल पर ईमान ले आता। अथवा संभव है कि और भी नबी भेजे गये हों तथा उस समुदाय ने प्रत्येक को झुठलाया हो।

कारियों के आदेशों का पालन किया ।[1]

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा संसार में भी उनके पीछे धिक्कार लगा दिया गया तथा क़ियामत (प्रलय) के दिन भी ।[2] देख लो आद के समुदाय ने अपने प्रभु से कुफ़्र (इंकार) किया, हूद के समुदाय आद पर धिक्कार हो ।[3]

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا

(६१) तथा समूद के समुदाय की ओर उनके भाई स्वालेह को भेजा ।[4] उसने कहा कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नही[5] उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया

---

[1]अर्थात अल्लाह के पैग़म्बरों को तो झुठलाया परन्तु जो लोग अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करते थे, उन का इस समुदाय ने अनुसरण किया ।

[2]धिक्कार का अर्थ है अल्लाह की कृपा से दूरी, पुण्य के कार्यों से वंचित तथा लोगों की ओर से धिक्कार तथा विलगाव । संसार में यह धिक्कार इस प्रकार कि ईमानवालों में इन का वर्णन सदैव धिक्कार तथा विलगाव के रूप में होगा तथा क़ियामत (प्रलय) मे इस प्रकार कि वहाँ सभी के सामने अपमानित तथा अनादर का सामना करेंगे तथा अल्लाह की यातना में फसेंगे ।

[3] "بُعْدٌ" का यह शब्द धिक्कार तथा विनाश के अर्थ के लिये है, जैसाकि इस से पूर्व भी स्पष्ट किया जा चुका है ।

[4] وإلى ثمود आधारित है पूर्व पर अर्थात وأرسلنا إلى ثمود हमनें समूद की ओर भेजा । यह समुदाय तबूक तथा मदीना के मध्य मदाएन स्वालेह (अर्थात हिजर) में निवास करता था तथा यह समुदाय आद के पश्चात् हुआ । आदरणीय स्वालेह को यहाँ भी समूद का भाई कहा गया है, जिस से तात्पर्य उन्हीं के वंश तथा जाति का एक सदस्य है ।

[5]आदरणीय स्वालेह ने भी अपने समुदाय को सर्वप्रथम एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दिया, जिस प्रकार सभी नबियों का नियम रहा है ।

فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝۶۱

है [1] तथा उसी ने तुम्हें इस धरती पर बसाया है ।[2] अतः तुम उस से क्षमा माँगो तथा उसकी ओर ध्यान करो । निःसंदेह मेरा प्रभु प्रार्थनाओं का स्वीकार करने वाला निकट है ।

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝۶۲

(६२) उन्होंने कहा ऐ स्वालेह ! इस से पूर्व हम तुम से बहुत-सी आशायें लगाये हुए थे, क्या तू हमें उनकी पूजा-अर्चना से रोकता है, जिन की पूजा-अर्चना हमारे पूर्वज करते चले आये, हमें तो इस धर्म में सन्देह है, जिस की ओर तू हमें बुला रहा है, हम तो चकित हैं ।[3]

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ

(६३) उसने उत्तर दिया कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! तनिक बताओ तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से किसी ख़ास तर्क पर हुआ । तथा उसने मुझे अपने पास से कृपा प्रदान की हो ।[4]

[1]अर्थात प्रारम्भ में तुम्हें धरती से पैदा किया, वह इस प्रकार कि तुम्हारे परम पिता आदम की उत्पत्ति मिट्टी से हुई तथा सभी मुनष्य आदम के वंश में पैदा हुए, इस प्रकार सभी मनुष्यों की उत्पत्ति धरती से हुई । अथवा इस का अर्थ है कि तुम जो कुछ खाते-पीते हो, सब धरती से पैदा होता है तथा उसी भोज्य पदार्थ से वीर्य बनता है, जो माता के गर्भाशय में जाकर मनुष्य के अस्तित्व का कारण बनता है ।

[2]अर्थात तुम में धरती को बसाने तथा आबाद करने की शक्ति तथा गुण उत्पन्न किये, जिस से तुम रहने के लिये मकानों का निर्माण करते हो, भोजन के लिये कृषि करते हो तथा अन्य जीवन सामग्री को उपलब्ध कराने के लिये उद्योग तथा कला से काम लेते हो ।

[3]अर्थात पैग़म्बर अपने समुदाय में चूँकि चरित्र, आचरण न्याय तथा सत्यता में श्रेष्ठ होता है, इसलिये समुदाय की उस से शुभ आशायें सम्बन्धित होती हैं । इसी कारण आदरणीय स्वालेह के समुदाय ने भी उन से यह कहा । परन्तु एकेश्वरवाद का आमन्त्रण देते ही उन की आशाओं का यह केन्द्र उनकी आँखों का काँटा बन गया तथा उस धर्म में शंका का प्रदर्शन किया जिसकी ओर आदरणीय स्वालेह उन्हें बुला रहे थे अर्थात एकेश्वरवादी धर्म का ।

[4] بَيِّنَة से तात्पर्य वह ईमान तथा विश्वास है, जो अल्लाह तआला पैग़म्बरों को प्रदान करता है तथा कृपा से नबूअत । जैसाकि पहले व्याख्या की जा चुकी है ।

إِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿٦٣﴾

फिर यदि मैंने उसकी अवज्ञा की,[1] तो कौन है जो उसके समक्ष मेरी सहायता करे ? तुम तो मेरी हानि ही में वृद्धि कर रहे हो ।[2]

وَيَٰقَوْمِ هَٰذِهِۦ نَاقَةُ ٱللَّهِ لَكُمْ ءَايَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِىٓ أَرْضِ ٱللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿٦٤﴾

(६४) तथा ऐ मेरे समुदाय वालो ! यह अल्लाह की भेजी हुई ऊँटनी है, जो तुम्हारे लिये एक चमत्कार है, अब तुम इसे अल्लाह की धरती पर खाती हुई छोड़ दो तथा उसे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाओ, अन्यथा शीघ्र ही तुम्हें यातना पकड़ लेगी ।[3]

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوا۟ فِى دَارِكُمْ ثَلَٰثَةَ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ﴿٦٥﴾

(६५) फिर भी उन लोगों ने उस ऊँटनी के पैर काट कर (मार डाला) । इस पर स्वालेह ने कहा कि अच्छा तो तुम अपने घरों में तीन दिन तक रह लो, यह वायदा झूठा नहीं है ।[4]

---

[1]अवज्ञा से तात्पर्य यह है कि यदि मैं तुम्हें सत्य की ओर तथा एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाना छोड़ दूँ, जैसाकि तुम चाहते हो ।

[2]अर्थात यदि मैं ऐसा करूँ तो तुम मुझे कोई लाभ नहीं पहुँचा सकते, परन्तु इस प्रकार तुम मेरी हानि में वृद्धि करोगे ।

[3]यह वही ऊँटनी है जो अल्लाह तआला ने उन की माँग पर उनकी आँखों के सामने एक पर्वत अथवा चट्टान से निकाली । इसीलिये उसे 'अल्लाह की ऊँटनी' कहा गया है क्योंकि वह मात्र अल्लाह के आदेश से चमत्कारिक रूप से अस्वभाविक विधि से प्रकट हुई थी । उस के लिये उन्हें निर्देशित कर दिया गया था कि इसे कष्ट न पहुँचाओ, वरन् तुम अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ जाओगे ।

[4]परन्तु वे अत्याचारी इस विशिष्ट चमत्कार के प्रदर्शित होने के उपरान्त भी न केवल ईमान ही नहीं लाये, अपितु अल्लाह के निर्देशों की भी अवहेलना करके उसे मार डाला, जिस के पश्चात् उन्हें तीन दिन का समय दे दिया गया कि तीन दिन के उपरान्त तुम्हें अल्लाह के प्रकोप के द्वारा नष्ट कर दिया जायेगा ।

(६६) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा,[1] हम ने स्वालेह तथा उन पर ईमान लाने वालों को अपनी कृपा से उस से भी बचा लिया तथा उस दिन के अपमान से भी। नि:संदेह तुम्हारा प्रभु शक्तिशाली तथा प्रभावशाली है।	فَلَمَّا جَاۤءَ اَمْرُنَا نَجَّیْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْیِ یَوْمِىِٕذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِیُّ الْعَزِیْزُ ﴿۶۶﴾
(६७) तथा अत्याचारों को बड़ी तीब्र कड़क ने आ दबोचा,[2] फिर तो वह अपने घरों में मुँह के बल मरे पड़े हुए रह गये।[3]	وَاَخَذَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوا الصَّیْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دِیَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿۶۷﴾
(६८) इस प्रकार कि जैसे वे वहाँ कभी आबाद न थे।[4] सावधान रहो कि समूद के समुदाय ने अपने प्रभु से कुफ्र किया। सुन लो, उन समूद वालों पर धिक्कार है।	كَاَنْ لَّمْ یَغْنَوْا فِیْهَا ؕ اَلَاۤ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿۶۸﴾
(६९) तथा हमारे भेजे हुए संदेशवाहक इब्राहीम के पास शुभसूचना लेकर पहुँचे[5] तथा सलाम	وَلَقَدْ جَاۤءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِیْمَ

[1]इससे तात्पर्य वही प्रकोप है जो वचनानुसार चौथे दिन आया तथा आदरणीय स्वालेह तथा उन पर ईमान लाने वालों के अतिरिक्त सभी को मार दिया गया।

[2]यह प्रकोप चीख़ तथा तीब्र कड़क के रूप में आया, कुछ के निकट यह आदरणीय जिब्रील की चीख थी तथा कुछ के निकट आकाश से आयी थी जिससे उनके दिल क्षिन्न-भिन्न हो गये तथा वे मर गये, उस के पश्चात् अथवा उसके साथ भूकम्प भी आया, जिस ने सब कुछ ऊपर-नीचे कर दिया। जैसाकि *सूर: आराफ़*-७८ के शब्द हैं।

[3]जिस प्रकार पक्षी मरने के पश्चात् धरती पर मिट्टी के साथ पड़ा होता है, उसी प्रकार यह मर कर मुंह के बल धरती पर पड़े हुए थे।

[4]उन की बस्ती अथवा ये लोग अथवा ये दोनों ही, इस प्रकार मिटा दिये गये कि उनका नामोनिशान शेष न रह गया, जैसे कि वे कभी वहाँ बसे भी नहीं थे।

[5]यह वास्तव में आदरणीय लूत तथा उनके समुदाय की घटना का एक भाग है। आदरणीय लूत आदरणीय इब्राहीम के चाचा के पुत्र थे। आदरणीय लूत की बस्ती 'मृत्यु सागर' के दक्षिण-पूर्व में थी जबकि आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़िलिस्तीन में निवास कर रहे थे। जब आदरणीय लूत के समुदाय को समाप्त करने का निर्णय ले लिया गया तो उनकी

بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۖ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

कहा [1] उन्होंने भी सलाम का उत्तर दिया [2] तथा बिना किसी देर के गाय का भूना हुआ बच्चा ले आये ।[3]

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۚ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾

(७०) अब जो देखा कि उन के तो हाथ भी उसकी ओर नहीं पहुँच रहे, तो उन्हें अनजान पाकर दिल ही दिल में उनसे भयभीत होने लगे ।[4]उन्होंने कहा डरो नहीं, हम तो लूत के समुदाय की ओर भेजे हुए आये हैं ।[5]

ओर फ़रिश्ते भेजे गये । ये फ़रिश्ते लूत के समुदाय की ओर जाते समय मार्ग में आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास ठहरे तथा उन्हें पुत्र की शुभसूचना दी ।

[1]अर्थात سلمنا عليك سلاما "हम आपको सलाम करते हैं ।"

[2]जिस प्रकार प्रथम सलाम एक लुप्त क्रिया के साथ जबर की स्थिति में था उसी प्रकार سلام यह उद्देश्य अथवा विधेय के कारण पेश की स्थिति में है । वाक्य होगा । أمركم سلام – عليكم سلام

[3]आदरणीय इब्राहीम अतिथियों का अत्यधिक सत्कार करते थे । वह यह नहीं समझ सके कि यह फ़रिश्ते हैं, जो मानव के रूप में आये हैं तथा खाते-पीते नहीं हैं बल्कि उन्होंने उन्हें अतिथि समझा तथा तुरन्त अतिथियों की सेवा-सत्कार के लिये बछड़े का भुना हुआ माँस उन की सेवा में प्रस्तुत किया । इससे यह भी पता चलता है कि अतिथि से पूछने की आवश्यकता नहीं बल्कि जो उपलब्ध हो सेवा में प्रस्तुत कर दिया जाये ।

[4]आदरणीय इब्राहीम ने जब देखा कि उन के हाथ खाने की वस्तुओं की ओर नहीं बढ़ रहे हैं तो उन्हें भय प्रतीत हुआ । कहते हैं कि उन के यहाँ यह बात प्रसिद्ध थी कि आया हुआ अतिथि यदि भोजन का लाभ न उठाये, तो समझा जाता था कि आने वाला अतिथि अच्छे विचार से नहीं आया है । इस से यह भी ज्ञात हुआ कि अल्लाह के पैग़म्बरों को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता । यदि इब्राहीम अलैहिस्सलाम परोक्ष के जानने वाले होते, तो बछड़े का भुना हुआ माँस भी न लाते तथा उन से भयभीत भी न होते ।

[5]इस भय का फ़रिश्तों ने आभास किया, या तो उन लक्षणों से जो ऐसे अवसरों पर मनुष्य के मुख पर प्रदर्शित होते हैं अथवा अपनी वार्तालाप में आदरणीय इब्राहीम ने इसका चर्चा किया, जैसाकि अन्य स्थान पर स्पष्टीकरण है ﴿إِنَّا مِنكُمْ وَجِلُونَ﴾ "हमें तो तुम से भय लगता है ।" (*सूरः अल-हिज्र*,५२) अतः फ़रिश्तों ने कहा डरो नहीं, आप जो समझ रहे हैं,

(७१) तथा उसकी पत्नी जो खड़ी हुई थी वह हँस दी,[1] तो हम ने उसे इसहाक़ की तथा उसके पश्चात् याक़ूब की शुभसूचना दी।	وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾
(७२) वह कहने लगी वाह ! मेरे यहाँ संतान हो सकती है, मैं स्वयं बुढ़िया तथा मेरे पति भी अति दीर्घ आयु के हैं, यह निःसंदेह अत्यधिक आश्चर्य की बात है।[2]	قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾
(७३) (फ़रिश्तों ने) कहा कि क्या तू अल्लाह के सामर्थ्य से आश्चर्य कर रही है,[3] तुम पर हे इस घर के लोगों ! अल्लाह की कृपा तथा उस की विभूतियाँ उतरे,[4] निःसंदेह अल्लाह ही के लिये सारी प्रशंसायें तथा महिमा है।	قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾

हम वह नहीं हैं, बल्कि हम अल्लाह के फ़रिश्ते हैं तथा हम लूत के समुदाय की ओर जा रहे हैं।

[1]आदरणीय इब्राहीम की पत्नी क्यों हँसी ? कुछ लोग कहते हैं कि लूत के समुदाय के उपद्रव से वह भी अवगत थी, उन के विनाश की सूचना पाकर वह भी प्रसन्न हुई। कुछ कहते हैं कि इस लिये हँसी आयी कि देखो आकाश से उनके विनाश का निर्णय हो चुका है तथा यह समुदाय अब भी निश्चिंत है। तथा कुछ कहते हैं कि इस हँसने का सम्बन्ध उस शुभसूचना से है, जो फ़रिश्तों ने इस बूढ़े जोड़े को दी।

[2]यह पत्नी आदरणीय सारह थीं, जो स्वयं भी बूढ़ी थीं तथा उनके पति आदरणीय इब्राहीम भी बूढ़े थे, इसलिये आश्चर्य एक स्वाभाविक बात थी, जिसे उन्होंने व्यक्त किया।

[3]यह प्रश्न नकारात्मक है। अर्थात तू अल्लाह तआला के न्याय तथा निर्णय पर किस प्रकार आश्चर्य का प्रदर्शन करती हो, जबकि उसके लिये कोई कार्य कठिन नहीं। तथा उसे सामयिक साधनों की आवश्यकता नहीं। वह तो जो चाहे, उस के केवल शब्द (कुन) (हो जा) से प्रदर्शन अस्तित्व में आ जाता है।

[4]आदरणीय इब्राहीम की पत्नी को यहाँ पर फ़रिश्तों ने أهل بيت (अहले बैत) (घर वाले) कहा है तथा उन्हें पुल्लिंग बहुवचन عليكم से सम्बोधित किया है। जिस से एक बात तो यह सिद्ध हो गई कि 'अहले बैत' में किसी भी व्यक्ति की पत्नी सर्वप्रथम सम्मिलित होती

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾

(७४) जब इब्राहीम का भय समाप्त हो गया तथा उसे शुभसूचना भी पहुँच चुकी तो हम से लूत के समुदाय के विषय में कहने सुनने लगे ।[1]

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُّنِيبٌ ﴿٧٥﴾

(७५) नि:संदेह इब्राहीम अत्यधिक धैर्यवान तथा कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर झुकने वाले थे ।

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾

(७६) हे इब्राहीम ! इस विचार को त्याग दो, आपके प्रभु का आदेश आ पहुँचा है, तथा उन पर न लौटायी जाने वाली यातना अवश्य आने वाली है ।[2]

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾

(७७) तथा जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के पास पहुँचे तो वह उनके कारण अत्यधिक दुखी हो गये तथा दिल ही दिल में दुखी होने लगे तथा कहने लगे कि आज का दिन अत्यधिक दुखों का दिन है ।[3]

है । दूसरी यह कि अहले बैत के लिए पुल्लिंग बहुवचन का प्रयोग करना भी उचित है । जैसाकि *सूर: अहज़ाब* आयत संख्या ३३ में अल्लाह तआला ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों को भी अहले बैत कहा है तथा उन्हें पुरूषवाचक बहुवचन सर्वनाम से सम्बोधित भी किया है ।

[1]इस वार्तालाप से तात्पर्य यह है कि आदरणीय इब्राहीम ने फ़रिश्तों से कहा कि जिस बस्ती को ध्वस्त करने तुम जा रहे हो, उसी में आदरणीय लूत भी उपस्थिति हैं । जिस पर फ़रिश्तों ने उत्तर दिया "हम जानते हैं कि लूत भी वहीं रहते हैं । परन्तु हम उन को तथा उन के परिवार को सिवाय उन की पत्नी के बचा लेंगे ।" (*सूर: अल-अनकबूत,* ३२)

[2]यह फ़रिश्तों ने आदरणीय इब्राहीम से कहा कि अब इस वार्तालाप से कोई लाभ नहीं, उसे छोड़िये ! अल्लाह का वह आदेश (विनाश का) आ चुका है, जो अल्लाह के यहाँ भाग्य में था । तथा अब यह प्रकोप न किसी की वार्तालाप से रूकेगा, न किसी प्रार्थना से टलेगा ।

[3]आदरणीय लूत की इस अत्यधिक व्याकुलता का कारण व्याख्याकारों ने यहाँ लिखा है कि यह फ़रिश्ते बिना दाढ़ी-मूँछ के नवयुवक के रूप में आये थे जिससे आदरणीय लूत ने

وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۭ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۭ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَاۗءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۭ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾

(७८) तथा उस का समुदाय उस की ओर दौड़ता हुआ, आया वह तो पहले ही से कुकर्मों में लीन था।[1] लूत ने कहा कि ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! ये हैं मेरी पुत्रियाँ जो तुम्हारे लिये अत्यधिक पवित्र हैं।[2] अल्लाह से डरो तथा मुझे मेरे अतिथियों के विषय में अपमानित न करो। क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं है।[3]

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ

(७९) उन्होंने उत्तर दिया कि तू भली-भाँति जानता है कि हमें तो तेरी पुत्रियों पर कोई

अपने समुदाय के दुराचार के कारण भय का आभास किया। क्योंकि उन को यह ज्ञात नहीं था कि आने वाले ये नवयुवक अतिथि नहीं हैं, अपितु अल्लाह की ओर से भेजे हुए फ़रिश्ते हैं, जो इस समुदाय को विनाश करने के लिये ही आये हैं।

[1]जब बाल मैथुन के इन रोगियों को पता चला कि कुछ सुन्दर युवक लूत के घर आये हैं तो दौड़े हुए आये तथा उन्हें अपने साथ ले जाने के लिये बाध्य करने लगे ताकि वे अपनी काम वासना की पूर्ति करें।

[2]अर्थात यदि तुम्हें काम वासना की संतृप्ति करनी है, तो उस के लिये मेरी अपनी पुत्रियाँ हैं, जिन से तुम विवाह करके अपना उद्देश्य पूरा कर लो। यह तुम्हारे लिये हर प्रकार से श्रेष्ठ हैं। कुछ ने कहा कि पुत्रियाँ से तात्पर्य समाज की सामान्य स्त्रियाँ हैं, तथा उन्हें अपनी पुत्रियाँ इसलिये कहा गया कि पैग़म्बर अपने समुदाय के पिता समान होता है। अर्थ यह है कि इस काम वासना के लिये स्त्रियाँ हैं, उनसे विवाह करो तथा अपना उद्देश्य पूर्ण करो। (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात मेरे घर आये अतिथियों के साथ दुर्व्यवहार एवं बल प्रयोग करके मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में से एक भी व्यक्ति समझदार नहीं है जो अतिथि सत्कार के नियमों को समझे ? तथा तुम्हारे बुरे उद्देश्य से तुम्हें रोक सके ? आदरणीय लूत ने यह सारी बातें इस आधार पर कीं कि उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि ये वास्तव में फ़रिश्ते हैं, वह उन्हें नव आगन्तुक तथा यात्री ही समझते रहे। इसलिये उचित रूप से उनकी सुरक्षा को अपने आदर तथा सम्मान के लिये आवश्यक समझते रहे। यदि उनको ज्ञात हो जाता अथवा परोक्ष का ज्ञान होता, तो स्पष्ट बात है कि उन को यह व्याकुलता कदापि प्रतीत न होती, जो उन्हें हुई तथा जिस का दृश्य यहाँ क़ुरआन मजीद में खींचा गया है।

لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٧٩﴾

अधिकार ही नहीं तथा तू हमारी मूल इच्छा से भली-भाँति परिचित है ।[1]

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٨٠﴾

(८०) लूत ने कहा कि काश कि मुझ में तुम से लड़ने की शक्ति होती अथवा मैं किसी सुदृढ़ शरण में होता ।[2]

قَالُوا يَا لُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ

(८१) अब फ़रिश्तों ने कहा हे लूत ! हम तेरे प्रभु के भेजे हुए हैं, असंभव है ये तुझ तक पहुँच जायें, बस तू अपने घरवालों को लेकर कुछ रात रहते निकल खड़ा हो । तुम में से

---

[1]अर्थात एक उचित तथा स्वाभाविक नियम को उन्होंने बिल्कुल रद्द कर दिया तथा अस्वाभाविकता एवं असभ्यता पर बल दिया, जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वह समुदाय अपनी असभ्यता के कुकर्म में कितना बढ़ गया था तथा किस प्रकार अंधा हो गया था ।

[2]शक्ति से अपने बाहुबल तथा अपने संसाधन की शक्ति तथा संतान की शक्ति तात्पर्य है तथा सुदृढ़ शरण से परिवार, क़बीला अथवा इसी प्रकार का कोई सुदृढ़ सहारा तात्पर्य है । अर्थात अति विवशता की अवस्था में कामना कर रहे हैं कि काश मेरे पास अपनी कोई शक्ति होती अथवा क़िसी परिवार अथवा क़बीले की शरण अथवा सहायता मुझे प्राप्त होती तो आज अतिथियों के कारण यह अपमान तथा अनादर न होता, मैं इन कुकर्मियों से निपट लेता तथा अतिथियों की सुरक्षा कर लेता । आदरणीय लूत की यह कामना, अल्लाह तआला पर भरोसा के विरूद्ध नहीं है । अपितु प्रत्यक्ष साधन के अनुकूल है । तथा अल्लाह तआला पर भरोसा का उचित अर्थ भी यही है कि पहले सभी स्पष्ट कारणों तथा साधनों का प्रयोग में लाया जाये तथा फिर अल्लाह पर भरोसा किया जाये । यह भरोसे का ग़लत अर्थ है कि हाथ-पैर तोड़कर बैठ जाओ तथा कहो कि हमारा भरोसा अल्लाह पर है । इसलिए आदरणीय लूत ने जो कुछ कहा, प्रत्यक्ष साधनों के आधार पर पूर्णरूप से उचित कहा । जिससे यह बात ज्ञात होती है कि अल्लाह का पैग़म्बर जिस प्रकार परोक्ष का जानने वाला नहीं होता, उसी प्रकार वह पूर्ण अधिकार वाला भी नहीं होता (जैसाकि आजकल लोगों ने यह विश्वास गढ़ लिया है) । यदि नबी दुनियाँ में अधिकार पूर्ण होते तो नि:संदेह आदरणीय लूत अपनी निस्सहाय स्थिति का तथा इस कामना का प्रदर्शन न करते जो उन्होंने वर्णित शब्दों में की ।

أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ ۖ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ ۚ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۚ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾

किसी को मुड़कर भी नहीं देखना चाहिये, सिवाय तेरी पत्नी के, इसलिये कि उसे भी वही पहुँचने वाला है, जो सब को पहुँचेगा, निःसंदेह उनके वायदे का समय प्रातः का है, क्या प्रातः अति निकट नहीं ?[1]

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ﴿٨٢﴾

(८२) फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हमने उस बस्ती को उलट-पलट कर दिया । ऊपर का भाग नीचे कर दिया तथा उन पर कंकड़ीले पत्थरों की वर्षा की जो तह पर तह थे ।

مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾

(८३) तेरे प्रभु की ओर से चिन्हित थे तथा वे उन अत्याचारियों से तनिक भी दूर न थे ।[2]

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ

(८४) तथा हमने मदयन वालों की ओर [3] उन के भाई शुऐब को भेजा, उस ने कहा हे मेरे समुदाय के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं,तथा तुम नाप-तौल में भी कमी न करो ।[4] मैं तुम्हें

---

[1]जब फ़रिश्तों ने आदरणीय लूत की विवशता तथा उनके समुदाय की दुष्टता को देखा तो बोले, ऐ लूत ! घबराने की आवश्यकता नहीं है, हम तक तो क्या अब ये तुझ तक भी नहीं पहुँच सकते । अब रात्रि के एक भाग में अपनी पत्नी के सिवाय अपने घरवालों को लेकर यहाँ से निकल जा । प्रातः होते ही इस बस्ती को ध्वस्त कर दिया जायेगा ।

[2]इस आयत में هِيَ का सम्बंध कुछ व्याख्याकारों के निकट चिन्हित कंकड़ीले पत्थर से है जो उन पर बरसाये गये तथा कुछ के निकट इसका सम्बन्ध उन बस्तियों से है जो ध्वस्त कर दी गयीं तथा जो सीरिया तथा मदीना के मध्य थीं तथा अत्याचारियों से तात्पर्य मक्का के मूर्तिपूजक तथा अन्य झूठे हैं । उद्देश्य उनको डराना है कि तुम्हारा परिणाम भी वैसा हो सकता है जिस का विगत समुदायों को सामना करना पड़ा ।

[3]मदयन के शोध के लिये देखिये *सूरः अल-आराफ़* आयत संख्या ८५ की व्याख्या ।

[4]एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने के पश्चात् उस समुदाय में जो खुली चारित्रक ख़राबी नाप-तौल में कमी की थी, उस से उन्हें रोका । उन का यह व्यवहार था कि यदि कोई

وَإِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٖ مُّحِيطٖ ﴿٨٤﴾

सम्पन्न देख रहा हूँ[1] तथा मुझे तुम पर घेरने वाले दिन के प्रकोप का भय भी है।[2]

وَيَٰقَوۡمِ أَوۡفُواْ ٱلۡمِكۡيَالَ وَٱلۡمِيزَانَ بِٱلۡقِسۡطِۖ وَلَا تَبۡخَسُواْ ٱلنَّاسَ أَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تَعۡثَوۡاْ فِي ٱلۡأَرۡضِ مُفۡسِدِينَ ﴿٨٥﴾

(८५) ऐ मेरे समुदाय के लोगो ! नाप-तौल न्यायपूर्वक पूरा-पूरा करो, लोगों को उनकी वस्तुऐं कम न दो,[3] तथा धरती में उपद्रव तथा आतंक न मचाओ।[4]

بَقِيَّتُ ٱللَّهِ خَيۡرٞ لَّكُمۡ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَۚ وَمَآ أَنَا۠

(८६) अल्लाह तआला का हलाल किया हुआ शेष लाभ तुम्हारे लिये बहुत ही उत्तम है यदि

उन के पास कोई वस्तु विक्रय करने के लिये आता तो उस से अधिक वस्तु ले लेते तथा यदि कोई ग्राहक ख़रीदने आता तो उस से नाप-तौल में कमी करते।

[1]यह उस मना करने का कारण है कि जब तुम पर अल्लाह की कृपा बनी हुई है तथा उसने सम्पन्नता तथा धन-धान्य से परिपूर्ण किया है तो फिर तुम में यह दुराचार क्यों है ?

[2]यह दूसरा कारण है यदि तुम अपने उस व्यवहार से न रूके, तो फिर संभव है कि क़ियामत के दिन की यातना से तुम न बच सकोगे। घेरने वाले दिन से तात्पर्य प्रलय का दिन है कि उस दिन कोई पापी अल्लाह की पकड़ से न बच सकेगा, न भाग कर कहीं छिप सकेगा।

[3]अब बलपूर्वक न्याय के साथ उन्हें पूरा-पूरा तौलने-नापने का आदेश दिया जा रहा है तथा लोगों को वस्तुएँ कम करके देने से रोका जा रहा है। क्योंकि अल्लाह के समक्ष यह भी महा अपराध है तथा अल्लाह तआला ने एक पूरी सूर: में इस अपराध के लक्षण दोष तथा उसके पारलौकिक दण्डों का वर्णन किया है।

﴿وَيۡلٞ لِّلۡمُطَفِّفِينَ ۞ ٱلَّذِينَ إِذَا ٱكۡتَالُواْ عَلَى ٱلنَّاسِ يَسۡتَوۡفُونَ ۞ وَإِذَا كَالُوهُمۡ أَو وَّزَنُوهُمۡ يُخۡسِرُونَ﴾

"मुतफ़्फ़ेफ़ीन अर्थात नाप-तौल में घटा-बढ़ा करने वालों के लिये विनाश है। ये वे लोग हैं जो लोगों से जब कोई वस्तु लेते हैं, तो पूरी लेते हैं तथा जब दूसरों को नाप अथवा तौल कर देते हैं, तो कम कर के देते हैं।" (*सूर: मुतफ़्फ़ेफ़ीन*)

[4]अल्लाह की अवज्ञा से, विशेषरूप से जिन का सम्बन्ध व्यक्ति के अधिकार से हो, जैसे यहाँ नाप-तौल में कमी तथा अधिकता में है, धरती पर अवश्य बिगाड़ तथा उपद्रव उत्पन्न होता है, जिस से उन्हें रोका गया है।

عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

तुम ईमानदार हो ।[1] मैं कोई तुम्हारा संरक्षक (तथा अधिकारी) नहीं हूँ ।[2]

قَالُوا يَٰشُعَيْبُ أَصَلَوٰتُكَ تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَآ أَوْ أَن نَّفْعَلَ فِىٓ أَمْوَٰلِنَا مَا نَشَٰٓؤُا۟ ۖ إِنَّكَ لَأَنتَ ٱلْحَلِيمُ ٱلرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

(८७) उन्होंने उत्तर दिया कि हे शुऐब ! क्या तेरी सलात[3] तुझे यही आदेश देती है कि हम अपने पूर्वजों के देवताओं को छोड़ दें तथा हम अपने माल में जो कुछ करना चाहे उस का करना भी छोड़ दें ।[4] तू तो अति सम्मानित तथा सतकर्मी है ।[5]

قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّى وَرَزَقَنِى مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَمَآ أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ

(८८) कहा कि ऐ मेरे समुदाय ! देखो तो यदि मैं अपने प्रभु की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण लिए हुए हूँ तथा उसने अपने पास से उत्तम

---

[1] بَقِيَّتُ ٱللَّهِ से तात्पर्य वह लाभ है जो नाप-तौल में किसी प्रकार की कमी किये बिना ईमानदारी के साथ सौदा देने के पश्चात् प्राप्त होता है । यह चूँकि हलाल तथा पवित्र है तथा पुण्य एवं शुभ भी इसी में है, इसलिये अल्लाह का शेष कहा गया है ।

[2] अर्थात मैं तुम्हें केवल सावधान तथा सतर्क कर सकता हूँ तथा वह अल्लाह के आदेश से कर रहा हूँ । परन्तु बुराईयों से तुम्हें रोक दूँ अथवा उस पर दण्ड दूँ, यह मेरे अधिकार में नहीं है । इन दोनों बातों का अधिकार केवल अल्लाह को है ।

[3] صَلَوٰةٌ से तात्पर्य इबादत, धर्म अथवा क़ुरआन पढ़ना है ।

[4] इससे तात्पर्य कुछ व्याख्याकारों के निकट ज़कात तथा दान है, जिन का आदेश प्रत्येक दैवी धर्मों में दिया गया है । अल्लाह के आदेश से ज़कात तथा दान का निकालना, अल्लाह के अवज्ञाकारियों को कष्टदायक होता है तथा वह समझते हैं कि जब हम अपने परिश्रम तथा योग्यता से माल कमाते हैं, तो उस को ख़र्च करने अथवा न करने पर हम पर प्रतिबन्ध क्यों हो ? तथा उस का एक निर्धारित भाग निकालने पर हमें बाध्य क्यों किया जाये ? इसी प्रकार से कमाई तथा व्यापार में वैध तथा अवैध एवम् उचित तथा अनुचित का प्रतिबन्ध भी ऐसे लोगों को अत्यन्त कष्टपद्र लगता है । सम्भव है कि नाप-तौल में कमी से रोकने को भी उन्होंने अपने अर्थ-उपभोग में हस्तक्षेप समझा हो । तथा इन शब्दों में उसे अस्वीकार किया हो । दोनों ही भावार्थ इस के उचित हैं ।

[5] आदरणीय शुऐब के लिये ये शब्द उन्होंने उपहास के रूप में प्रयोग किये ।

إِلَىٰ مَا أَنْهَاكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾

जीविका दे रखी है,[1] मेरी कदापि यह इच्छा नहीं कि तुम्हारा विरोध करके स्वयं उस वस्तु की ओर झुक जाऊँ जिससे तुम्हें रोक रहा हूँ,[2] मेरा विचार तो अपनी शक्ति भर सुधार करने का ही है।[3] तथा मेरी सन्मति अल्लाह ही की सहायता से है,[4] उसी पर मेरा भरोसा है तथा उसी की ओर मैं आकर्षित हूँ।

وَيَا قَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ ۚ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِنْكُمْ بِبَعِيدٍ ﴿٨٩﴾

(८९) तथा ऐ मेरे समुदाय (के लोगो) ! कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे विरोध में आकर उन यातनाओं के पात्र हो जाओ, जो नूह के समुदाय तथा हूद के समुदाय एवं स्वालेह के समुदाय को आयीं।[5] तथा लूत का समुदाय तो तुम से तनिक दूर नहीं।

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा तुम अपने प्रभु से क्षमा-याचना करो तथा उसकी ओर झुक जाओ, विश्वास करो कि मेरा प्रभु अत्यधिक कृपालु एवं अत्यधिक प्रेम करने वाला है।

---

[1]उत्तम जीविका का दूसरा अर्थ नबूअत भी वर्णन किया गया है।

[2]अर्थात जिस काम से मैं तुम्हें रोकूँ, तुम से छिपकर, वह मैं स्वयं करूँ, ऐसा नहीं हो सकता।

[3]मैं तुम्हें जिस कार्य के करने अथवा जिससे रूकने का आदेश देता हूँ, इससे उद्देश्य अपनी शक्ति भर तुम्हारा सुधार ही है।

[4]अर्थात सत्य तक पहुँचने का जो मेरा लक्ष्य है, वह अल्लाह की इच्छा से संभव है, इसलिये सभी मामलों में मेरा भरोसा उसी पर है तथा उसी की ओर मैं ध्यान केन्द्रित करता हूँ।

[5]अर्थात उन का स्थान तुम से दूर नहीं, अथवा उस कारण मैं तुम से दूर नहीं, जो उन के ऊपर प्रकोप का कारण बना।

(९१) उन्होंने कहा हे शुऐब ! तेरी अधिकाँश बातें हमारी समझ में नहीं आतीं,[1] तथा हम तो तुझे अपने अंदर बहुत निर्बल पाते हैं ।[2] यदि तेरे क़बीले का आदर न होता तो हम तो तुझे पथराव कर देते,[3] तथा हम तुझे कोई सम्मानित व्यक्ति नहीं समझते[4] ।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ؗ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝٩١

(९२) उन्होंने उत्तर दिया कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! क्या तुम्हारे निकट मेरे क़बीले के लोग अल्लाह से भी अधिक सम्मानित हैं कि तुम ने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है ।[5]

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝٩٢

---

[1]यह या तो उन्होंने उपहास स्वरूप तथा अपमान के लिये कहा, जबकि बातें द्विवोध नहीं थीं । इस अवस्था में वोध का इंकार अवास्तविक होगा अथवा उनका उद्देश्य उन बातों के समझने से विवशता व्यक्त करना है जिनका सम्बंध परोक्ष से है, जैसे मरने के पश्चात् जीवित होना, क़ियामत के निर्णय तथा न्याय, स्वर्ग-नरक आदि । इस आधार पर समझ से असमर्थता वास्तविक होगी ।

[2]यह निर्बलता शारीरिक आधार पर थी, जैसा कि कुछ का विचार है कि आदरणीय शुऐब की दृष्टि कमजोर थी अथवा वह क्षीण तथा शारीरिक रूप से कमजोर थे अथवा इस आधार पर उन्हें कमज़ोर कहा कि वह स्वयं भी विरोधियों का अकेले सामना करने की शक्ति नहीं रखते थे ।

[3]आदरणीय शुऐब का वंश कहा जाता है कि उनका सहायक नहीं था, परन्तु वह क़बीला कुफ़्र (अधर्म) तथा शिर्क में अपने समुदाय के साथ था, इसलिये अपना सहधर्मी होने के कारण उस जाति का आदर, अन्ततः आदरणीय शुऐब के साथ कड़ा व्यवहार तथा उन्हें हानि पहुँचाने में बाधक था ।

[4]परन्तु चूँकि तेरे क़बीले का सम्मान किसी भी प्रकार से हमारे दिलों में है, इसलिये हम तुम्हें छोड़ रहे हैं ।

[5]कि तुम मुझे मेरी जाति के कारण क्षमाकर रहे हो । परन्तु जिस अल्लाह ने मुझे नबूअत के सम्मान से विभूषित किया है, उसका कोई सम्मान तथा पद की गरिमा का कोई आदर तुम्हारे दिलों में नहीं है तथा तुमने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है । यहाँ आदरणीय शुऐब ने ﴿أَعَزُّ عَلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ﴾ (अल्लाह से अधिक आदरणीय) कहा जिससे यह बताना उद्देश्य है

निःसंदेह मेरा प्रभु जो कुछ तुम कर रहे हो सबको घेरे हुए है।

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

(९३) तथा ऐ सामुदायिक (भाईयो) ! अब तुम अपने स्थान पर कार्य किये जाओ, मैं भी कार्य कर रहा हूँ, तुम्हें निकट में ज्ञात हो जायेगा कि किस के पास वह यातना आती है जो उसे अपमानित कर दे तथा कौन है जो झूठा है ? तुम प्रतीक्षा करो तथा मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।[1]

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा जब हमारा आदेश (प्रकोप) आ पहुँचा, हमने शुऐब को तथा उनके साथ सभी ईमानवालों को अपनी विशेष कृपा से मुक्ति प्रदान की तथा अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि की यातना ने आ दबोचा,[2] जिस से वह अपने घरों में औंधे पड़े हुए शेष हो गये।

कि नबी का उपहास वास्तव में अल्लाह का उपहास है। इसलिये कि नबी अल्लाह का दूत होता है। तथा इसी आधार पर अब सत्यवादी आलिमों (धर्मज्ञानियों) का अपमान तथा उनकी हीनाई यह अल्लाह के धर्म का अपमान तथा उसकी हीनाई है, इसलिये कि वे अल्लाह के धर्म के प्रतिनिधि हैं। واتخذتموه में सर्वनाम का संकेत अल्लाह की ओर है तथा अर्थ यह है कि अल्लाह के उस मामले को जिसे लेकर उस ने मुझे भेजा है, उसे तुम ने अपमानित कर दिया है तथा उस की तुम ने कोई चिन्ता नहीं की।

[1]जब उन्होंने देखा कि यह समुदाय अपने कुफ़ (अविश्वास) तथा अनेकेश्वरवाद पर अडिग है तथा शिक्षा-दीक्षा का भी कोई प्रभाव नहीं हो रहा तो कहा अच्छा तुम अपने मार्ग पर चलते रहो, निकट में ही तुम्हें सत्य-असत्य का तथा इस बात का कि अपमानित करने वाला प्रकोप का अधिकारी कौन है ? ज्ञान हो जायेगा।

[2]इसी चीख़-चिंघाड़ से उन के दिल खन्ड-खन्ड हो गये तथा वे मर गये, उस के पश्चात् भूकम्प भी आया, जैसाकि *सूरः आराफ़*-९१ तथा *सूरः अनकबूत*-३७ में है।

كَانْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۗ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾

(९५) जैसेकि वह उन घरों में कभी बसे ही न थे, सावधान रहो, मदयन के लिये भी वैसी ही दूरी[1] हो जैसी दूरी समूद की हुई।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾

(९६) तथा निश्चय ही हम ने मूसा को अपनी आयतों तथा ज्योतिर्मिय प्रमाणों के साथ भेजा था।[2]

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾

(९७) फ़िरऔन तथा उसके मुखियाओं की ओर[3] ओर, फिर भी उन लोगों ने फ़िरऔन के आदेशों का पालन किया तथा फ़िरऔन का कोई आदेश उचित तथा ठीक था ही नहीं।[4]

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ

(९८) वह तो क़ियामत (प्रलय) के दिन अपनी जाति का अगुवा बनकर उन सब को नरक

---

[1]अर्थात धिक्कार, फटकार, अल्लाह की कृपा से वंचित तथा दूरी।

[2]'आयात' से कुछ के निकट धर्मशास्त्र (तौरात) तथा 'सुलतानिम मोबीन' से चमत्कार तात्पर्य है तथा कुछ के निकट 'आयात' से 'नौ निशानियाँ' तथा 'सुलतानिम मोबीन' (ज्योतिर्मिय प्रमाण) से छड़ी तात्पर्य है। छड़ी यद्यपि 'नौ निशानियों' में सम्मिलित है, परन्तु यह चमत्कार चूँकि अत्यधिक भव्य था, इसलिये विशेषरूप से वर्णन किया गया है।

[3] مَلَاء समुदाय के सम्मानित तथा श्रेष्ठ लोगों को कहा जाता है। (इसकी व्याख्या पहले गुज़र चुकी है) फ़िरऔन के साथ, उसके सदन के सम्मानित लोगों का नाम इसलिये लिया गया है कि समुदाय के सम्मानित ही हर बात के उत्तरदायी होते थे तथा समुदाय उन्हीं के पीछे चलता था। यदि ये आदरणीय मूसा पर ईमान ले आते तो नि:संदेह फ़िरऔन का सारा समुदाय ईमान ले आता।

[4] رَشِيدٍ का अर्थ निर्देशित है। अर्थात बात तो आदरणीय मूसा की दीक्षा तथा निर्देशन की थी, परन्तु उसे उन लोगों ने रद्द कर दिया तथा फ़िरऔन की बात, जो दीक्षा तथा निर्देशन से दूर थी, उस का उन्होंने अनुकरण किया।

النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾

में जा खड़ा करेगा,[1] वह अत्यधिक बुरा घाट है [2] जिस पर ला खड़े किये जायेंगे ।

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾

(९९) तथा उन पर इस लोक में भी धिक्कार हुई तथा क़ियामत के दिन भी[3] कितना बुरा पुरस्कार है जो दिया गया ।[4]

ذَٰلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْقُرَىٰ نَقُصُّهُ عَلَيْكَ ۖ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾

(१००) बस्तियों के यह कुछ समाचार जो हम तेरे समक्ष वर्णन कर रहे हैं, उन में से कुछ विद्यमान हैं तथा कुछ पूर्णतः ध्वस्त हो गयी हैं ।[5]

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن ظَلَمُوا

(१०१) तथा हम ने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया,[6] अपितु स्वयं ही उन्होंने अपने ही

---

[1]अर्थात फ़िरऔन जिस प्रकार दुनिया में उसका अगुवा तथा मुखिया था, क़ियामत के दिन भी यह आगे-आगे ही होगा तथा अपने समुदाय को अपने नेतृत्व में नरक में लेकर जायेगा ।

[2] ورد पानी के घाट को कहते हैं, जहाँ प्यासे जाकर अपनी प्यास बुझाते हैं। परन्तु यहाँ नरक को ورد कहा गया है । مورود वह स्थान अथवा घाट अर्थात नरक जिस में लोग ले जाये जायेंगे अर्थात स्थान भी बुरा तथा जाने वाले भी बुरे ।

[3] لعنة से तात्पर्य धिक्कार तथा अल्लाह की दया से दूरी तथा वंचित होना है, जैसाकि दुनिया में भी वह अल्लाह की कृपा से वंचित तथा अख़िरत (परलोक) में भी उससे वंचित ही रहेंगे, यदि ईमान न लाये ।

[4] رفد, परितोषिक तथा उपहार को कहा जाता है । यहाँ धिक्कार को رفد, कहा गया है । इसीलिये इसे बुरा उपहार कहा गया है । مرفود से तात्पर्य वह उपहार है जो किसी को दिया जाये । यह الرفد पर बल देने के लिये है ।

[5] قائم से तात्पर्य वह बस्तियाँ, जो अपनी छतों पर स्थित हैं । तथा محصود - حصيد के अर्थों में प्रयोग हुआ है, जिससे तात्पर्य वह बस्तियाँ जो कटी हुई खेतियों के समान ध्वस्त हो गयीं । अर्थात जिन पूर्वोक्त बस्तियों (नगरों) की कथा की चर्चा हम कर रहे हैं उनमें से कुछ तो अब भी विद्यमान हैं जिन के अवशेष शिक्षा प्राप्ति करने के चिन्ह हैं तथा कुछ ध्वस्त हो गईं जिन का नाम इतिहास के पन्नों में शेष रह गया है ।

[6]उन को प्रकोप तथा विनाश में डालकर ।

أَنفُسَهُمْ فَمَآ أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ﴿١٠١﴾

ऊपर अत्याचार किया,[1] तथा उन्हें उन के देवताओं नें कोई लाभ नहीं पहुँचाया, जिन्हें वे अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते थे, जबकि तेरे प्रभु का आदेश आ पहुँचा, अपितु उन्होंने उनकी हानि ही बढ़ा दी ।[2]

وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَآ أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा तेरे प्रभु की पकड़ का यही नियम है, जबकि वह बस्तियों में रहने वाले अत्याचारियों को पकड़ता है, नि:संदेह उस की पकड़ दुखदायी एवं अत्यन्त कड़ी है ।[3]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ

(१०३) नि:संदेह इस में[4] उन लोगों के लिये शिक्षाप्रद चिन्ह है, जो क़ियामत (प्रलय) की यातना से डरते हैं । वह दिन जिस में सब

---

[1]अधर्म तथा अवज्ञाकारिता करके ।

[2]जबकि उनका विश्वाश यह था कि ये उन्हें हानि से बचायेंगे तथा लाभ पहुँचायेंगे । परन्तु जब अल्लाह का प्रकोप आया तो स्पष्ट हो गया कि उन का यह अंध-विश्वास था तथा यह बात सिद्ध हो गयी कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई किसी को लाभ-हानि पहुँचाने का सामर्थ्य नहीं रखता ।

[3]अर्थात जिस प्रकार अल्लाह ने प्राचीन बस्तियों को ध्वस्त कर दिया, भविष्य में भी वह अत्याचारियों को इसी प्रकार पकड़ने का सामर्थ्य रखता है । हदीस में आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ، حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ ».

"अल्लाह तआला नि:संदेह अत्याचारियों को अवसर देता है । परन्तु जब उस की पकड़ करने पर आता है, तो फिर उसी प्रकार सहसा करता है कि फिर अवसर नहीं देता ।"

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत (मंत्र) पढ़ी (सहीह बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर, सूरः-हूद, मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस्सिलः, बाबु तहरीमिज़्ज़ुल्मे)

[4]अर्थात अल्लाह की पकड़ में अथवा उन घटनाओं में जो शिक्षा एवं उपदेश के लिये वर्णन की गयी हैं ।

لَهُ النَّاسُ وَ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾

लोग एकत्रित किये जायेंगे तथा वह, वह दिन है जिस में सब उपस्थिति किये जायेंगे ।[1]

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा उसे हम जो देर करते हैं, वह केवल एक निर्धारित समय तक के लिये है ।[2]

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾

(१०५) जिस दिन वह आ जायेगी किसी को साहस न होगा कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई बात भी कर ले,[3] तो उनमें से कोई दुर्भाग्यशाली होगा तथा कोई भाग्यशाली ।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾

(१०६) परन्तु जो दुर्भाग्यशाली हुए वे नरक में होंगे, वहाँ उनकी धीमी तथा ऊँची ध्वनि होगी ।

---

[1]अर्थात आदि से अन्त तक के सभी लोग एकत्र होंगे । कोई शेष नहीं रहेगा ।

[2]अर्थात क़ियामत (प्रलय) के दिन में देरी का कारण यह है कि अल्लाह तआला उस के लिये एक दिन निर्धारित किये हुआ है । जब वह निर्धारित समय आ जायेगा तो एक क्षण की देरी न होगी ।

[3]वार्तालाप न करने से तात्पर्य, किसी को अल्लाह तआला से तर्क-वितर्क की अथवा सिफ़ारिश करने का साहस नहीं होगा । इसके अतिरिक्त कि वह अनुमति प्रदान करे । सिफ़ारिश (अभिस्तावना) की एक विस्तृत हदीस में है । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« ولاَ يَتَكَلَّمُ يَوْمَئِذٍ إِلاَّ الرُّسُلُ، وَدَعْوَى الرُّسُلِ يَوْمَئِذٍ؛ اللَّهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ ».

"उस दिन नबियों के सिवाय किसी को वार्तालाप का साहस न होगा तथा नबियों के मुख पर उस दिन भी केवल यही होगा कि ऐ अल्लाह ! हमें बचा लें ।"(सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान, बाब फ़ज़लिस्सुजूद, तथा मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु मारिफ़त तरीक़िर्रूय:)

(१०७) वे वहीं सदैव रहने वाले हैं, जब तक आकाश तथा धरती स्थापित रहें,[1] सिवाय उस समय के जो तुम्हारे प्रभु की इच्छा हो ।[2] निःसंदेह तेरा प्रभु जो कुछ चाहे कर डालता है ।

خَٰلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ ٱلسَّمَٰوَٰتُ وَٱلْأَرْضُ إِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾

---

[1]इन शब्दों से कुछ लोगों में यह भ्रम हुआ है कि काफ़िरों के लिये नरक की यातना स्थाई नहीं है, अपितु एक समय तक है अर्थात जब तक धरती तथा आकाश का अस्तित्व रहेगा। परन्तु यह बात सही नहीं है क्योंकि यहाँ ما دامت السموات و الأرض अरब वासियों के दैनिक बोलचाल तथा मुहाविरे के अनुसार उतरा है। अरबों की यह आदत थी कि जब किसी वस्तु का स्थायित्व निर्धारित करने का उद्देश्य होता था तो कहते थे هذا دائمٌ دوام السموات و الأرض (यह वस्तु उसी प्रकार नित्य रहेगी जिस प्रकार आकाश तथा धरती नित्य है। इस वाक शैली को क़ुरआन करीम में प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ यह है कि काफ़िर तथा मूर्तिपूजक नरक में सदैव रहेंगे जिसको क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर خالدين فيها أبداً के शब्दों में वर्णन किया गया है। एक अन्य अर्थ यह भी वर्णन किया गया है कि आकाश तथा धरती से तात्पर्य संसार के आकाश तथा धरती नहीं जो ध्वस्त हो जायेंगे, परन्तु परलोक के आकाश तथा धरती हैं जो इससे भिन्न होंगे, जैसाकि क़ुरआन करीम में इसका वर्णन है।

﴿ يَوْمَ تُبَدَّلُ ٱلْأَرْضُ غَيْرَ ٱلْأَرْضِ وَٱلسَّمَٰوَٰتُ ﴾

"उस दिन यह धरती अन्य धरती से बदल दी जायेगी तथा आकाश भी (बदल दिये जायेंगे)"(*सूर: इब्राहीम-४८*)

तथा आख़िरत (परलोक) के यह धरती तथा आकाश स्वर्ग तथा नरक की भाँति सदैव रहेंगे। इस आयत में यही आकाश तथा धरती तात्पर्य है, न कि संसार के धरती तथा आकाश, जो ध्वस्त हो जायेंगे। (इब्ने कसीर) इन दोनों भावार्थों में से कोई भी भावार्थ ले लिया जाये, आयत का भावार्थ स्पष्ट हो जाता है तथा वह भ्रम उत्पन्न नहीं होता, जो वर्णित हुआ है। इमाम शौकानी ने इसके अन्य कई भावार्थ वर्णन किये हैं, जिन्हें ज्ञान वाले देख सकते हैं (फ़तहुल क़दीर)

[2]इस अनिवर्धत के भी कई भावार्थ वर्णन किये गये हैं। उनमें सर्वाधिक सही भावार्थ यही है कि यह निबंधन उन पापियों के लिये है जो एकेश्वरवादी तथा ईमानवाले होंगे। इस आधार पर इस से पूर्व की आयत में شقيٌ का शब्द साधारणत: अर्थात काफ़िर तथा अवज्ञाकारी दोनों को सम्मिलित होंगे तथा إلا ماشاء ربك से अवज्ञाकारी ईमानवाले अलग हो जायेंगे। तथा ماشاء में مَا शब्द مَن के अर्थ में है।

وَأَمَّا الَّذِينَ سُعِدُوا فَفِي الْجَنَّةِ خَٰلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَٰوَٰتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۖ عَطَاءً غَيْرَ مَجْذُوذٍ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा जो भाग्यशाली किये गये, वे स्वर्ग में होंगे जहाँ वे सदैव रहेंगे जब तक आकाश तथा धरती शेष रहे, परन्तु जो तेरा प्रभु चाहे ।[1] यह असीम वरदान है ।[2]

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَٰؤُلَاءِ ۚ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُم مِّن قَبْلُ ۚ وَإِنَّا لَمُوَفُّوهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ﴿١٠٩﴾

(१०९) इसलिये आप उन चीज़ों से शंका व सन्देह में न रहें, जिन्हें ये लोग पूज रहे हैं, उनकी पूजा तो इस प्रकार है, जिस प्रकार इनके पूर्वजों की इससे पूर्व थी । हम उन सब को पूरा-पूरा भाग बिना कमी के देनें वाले ही हैं ।[3]

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ

(११०) निःसंदेह हमने मूसा को किताब प्रदान की । फिर उस में मतभेद किया गया ।[4] यदि पहले ही आप के प्रभु की बात लागू न हो गई होती तो निश्चय ही उनका निर्णय कर दिया

---

[1]यह निबंधन भी अवज्ञाकारी ईमानवालों के लिये है । अर्थात अन्य स्वर्ग में जाने वालों की भाँति ये अवज्ञाकारी ईमानवाले भी सदैव स्वर्ग में नहीं रहे होंगे । बल्कि प्रारम्भ में कुछ समय नरक में व्यतीत करेंगे, उस के पश्चात् नबियों तथा ईमानवालों की सिफ़ारिश से नरक से निकालकर स्वर्ग में डाल दिये जायेंगे, जैसाकि सहीह हदीस से यह बातें सिद्ध हैं ।

[2] غَيْرَ مَجْذُوذٍ का अर्थ है अनन्त असीम कृपा । इस वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि जिन पापियों को नरक से निकाल कर स्वर्ग में डाला जायेगा, यह प्रवेश अस्थाई नहीं, स्थाई होगा, तथा सभी स्वर्गवासी सदैव अल्लाह की प्रदान एवम् अनुकम्पाओं का आनन्द लेते रहेंगे उस मे कोई टूट न होगी ।

[3]इससे तात्पर्य वह प्रकोप है जिसके वे अधिकारी होंगे, इसमें कोई कमी नहीं की जायेगी ।

[4]अर्थात किसी ने इस किताब को माना किसी ने नहीं माना । यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सांत्वना दी जा रही है कि पूर्व के नबियों के साथ भी यही व्यवहार होता आया है, कुछ लोग उन पर ईमान लाने वाले होते तथा कुछ अन्य झुठलाने वाले होते । इसलिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने इस झुठलाये जाने की चिन्ता न करें ।

وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿١١٠﴾

जाता,[1] उन्हें तो इस में शंका लग रही है (ये तो दुविधा में हैं)।

وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

(१११) तथा वस्तुतः उन में से प्रत्येक को (जब उनके समक्ष जायेगा तो) आप का प्रभु उसे उसके कर्मों का पूरा प्रतिकार प्रदान करेगा। निश्चय वे जो कुछ कर रहे हैं उनसे वे अवगत हैं।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَن تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

(११२) बस आप अडिग रहिये जैसाकि आपको आदेश दिया गया है तथा वे लोग भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा-याचना) कर चुके हैं। सावधान ! तुम सीमा से न बढ़ना,[2] अल्लाह तुम्हारे सारे कर्मों को देख रहा है।

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ

(११३) तथा देखो अत्याचारियों की ओर कदापि न झुकना वरन् तुम्हें भी अग्नि की लौ लग जायेगी[3] तथा अल्लाह के अतिरिक्त

---

[1]इससे तात्पर्य यह है कि यदि अल्लाह तआला ने पूर्व से ही उन के लिये यातना का दिन निर्धारित न कर लिया होता, तो वह उन्हें तुरन्त नाश कर डालता।

[2]इस आयत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ईमानवालों को एक तो दृढ़ रहने की शिक्षा दी जा रही है, जो शत्रु का सामना करने के लिये एक बहुत बड़ा हथियार है। अन्य طغيان अर्थात بَغْي (सीमा उल्लघंन) से रोका गया है, जो ईमानवालों के लिये नैतिक शक्ति तथा उत्तम कर्म के लिये अति आवश्यक है। यहाँ तक कि यह उल्लंघन शत्रु के साथ मामला करते समय भी उचित नहीं है।

[3]इसका अर्थ यह है कि अत्याचारियों के साथ कोमलता तथा प्रशंसा करके उनसे सहायता न लो। इससे उनको यह आभास होगा कि जैसे तुम उनकी अन्य बातों को भी प्रिय समझते हो। इस प्रकार यह तुम्हारा एक बड़ा अपराध बन जायेगा, जो तुम्हें भी उनके साथ नरक की अग्नि का अधिकारी बना सकता है। इससे अत्याचारी राज्य अधिकारियों के साथ सम्बन्ध बनाने को भी निषेध करने का अर्थ निकलता है। किन्तु जो कि जनहित

अन्य तुम्हारी सहायता करने वाला न खड़ा हो सकेगा तथा न तुम्हें सहायता दी जायेगी।

اللهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُونَ ﴿١١٣﴾

(११४) तथा दिन के दोनों किनारों में नमाज़ स्थापित रख तथा रात्रि की कई घड़ियों में भी,[1] निःसंदेह पुण्य बुराईयों को दूर कर देते हैं।[2] यह शिक्षा है शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

وَأَقِمِ الصَّلَوٰةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّـَٔاتِ ۚ ذَٰلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّٰكِرِينَ ﴿١١٤﴾

में हो अथवा धार्मिक लाभ प्राप्ति के लिए हो। ऐसी अवस्था में दिल से घृणा रखते हुए उन से सम्बन्ध रखने की आज्ञा होगी। जैसा कि कुछ हदीसों से स्पष्ट है।

[1]'दोनों किनारों' से तात्पर्य कुछ ने भोर तथा मग़रिब (सूर्यास्त), कुछ ने मात्र इशा (रात्रि) तथा कुछ ने मग़रिब (सूर्यास्त) तथा इशा दोनों का समय लिया है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि संभव है कि यह आयत मेराज से पूर्व उतरी हो, जिस में पाँच नमाज़ें अनिवार्य की गयीं। क्योंकि इससे पूर्व केवल दो ही नमाज़ें अनिवार्य थीं एक सूर्योदय से पूर्व तथा एक सूर्यास्त से पूर्व तथा रात्रि के पिछले भाग में तहज्जुद की नमाज़। फिर तहज्जुद की नमाज़ साधारण मुसलमानों से क्षमा कर दी गई। फिर उस तहज्जुद नमाज़ की अनिवार्यता कुछ के कथन अनुसार आप से भी समाप्त कर दी गई। (इब्ने कसीर)

[2]जिस प्रकार की हदीसों में भी इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। जैसे "पाँच नमाज़ें, जुमअः (शुक्रवार) से जुमअः (शुक्रवार) तक तथा रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक, इनके मध्य होने वाले पापों को दूर कर देने वाले हैं, यदि महापाप से बचा जाये" (सहीह मुस्लिम किताबुल तहारः.....) एक अन्य हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"बताओ ! यदि तुम में किसी के द्वार के सामने एक बड़ी नहर बहती हो, वह प्रत्येक दिन उस में पाँच बार स्नान करता हो, क्या उसके शरीर पर उस के पश्चात् मैल-कुचैल शेष रह जायेगी।" सहाबा (आपके सहचरों) ने उत्तर दिया, "नहीं" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

इसी प्रकार पाँच नमाज़ें हैं, उनके द्वारा अल्लाह तआला पापों तथा त्रुटियों को मिटा देता है। (सहीह बुख़ारी किताबुल मवाकीत, बाबुस्सलवातिल ख़मसे कफ्फ़ारतुन (तथा) मुस्लिम किताबुल मसाजिद बाबुल मश्ये इलस्सलाते तुमहा बिहिल ख़ताया व तुरफ़अ बिहिद दरजातु)

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

(११५) तथा आप धैर्य रखिये निःसंदेह अल्लाह (तआला) सदाचारियों का फल नष्ट नहीं करता।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

(११६) तो क्यों न तुम से पहले के युग के लोगों में से ऐसे परोपकारी लोग हुए जो धरती में उपद्रव फैलाने से रोकते, अतिरिक्त उन कुछ के जिन्हें हमने उनमें से मुक्ति प्रदान की थी।[1] अत्याचारी लोग तो उस वस्तु के पीछे पड़ गये, जिस में उन्हें सम्पन्नता दी गई थी और वे पापी थे।[2]

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

(११७) आपका प्रभु ऐसा नहीं कि किसी बस्ती को अत्याचार से ध्वस्त कर दे जबकि वहाँ के लोग सदाचारी हों।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۖ وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾

(११८) यदि आप का प्रभु चाहता तो सब लोगों को एक मार्ग पर एक समुदाय कर देता। वे तो सदैव विरोध करने वाले ही रहेंगे।

إِلَّا مَن رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ

(११९) सिवाय उनके जिन पर आपका पालनहार दया करे, उन्हें तो इसीलिये पैदा किया है,[3] तथा

---

[1]अर्थात पूर्व के समुदायों में ऐसे भले लोग क्यों न हुए जो उपद्रवियों तथा दुराचारियों को उपद्रव तथा दुराचार से रोकते ? फिर कहा कि ऐसे लोग हुए तो सही, परन्तु बहुत थोड़े। जिन्हें हमने उस समय छोड़ दिया, जब अन्यों को प्रकोप के द्वारा ध्वस्त कर दिया।

[2]अर्थात ये अत्याचारी अपने अत्याचार पर अडिग रहे तथा अपने गर्व में मस्त रहे। यहाँ तक कि उन को प्रकोप ने आकर धर लिया।

[3]'इसीलिये' का अर्थ कुछ विद्वानों ने मतभेद तथा कुछ ने कृपा लिया है। दोनों परिस्थितियों में भावार्थ यह होगा कि हमने मनुष्य को परीक्षा के लिये पैदा किया है। जो सत्य धर्म से मतभेद का मार्ग अपनायेगा, वह परीक्षा में असफल तथा जो उसको अपना लेगा, वह सफल तथा अल्लाह की कृपा का अधिकारी होगा।

جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

आपके प्रभु की यह बात पूरी है कि मैं नरक को जिन्नों तथा इन्सानों सब से भर दूँगा ।[1]

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاءَكَ فِي هَٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾

(१२०) तथा रसूलों की सब स्थितियाँ हम आप के समक्ष आप के दिल के सन्तोष के लिए वर्णन कर रहे हैं । आप के पास इस सूर: (अंश) में भी सत्य पहुँच चुका, जो शिक्षा तथा उपदेश है, ईमान वालों के लिए ।

وَقُل لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَامِلُونَ ﴿١٢١﴾

(१२१) तथा ईमान न लाने वालों से कह दीजिये कि तुम लोग अपने स्तर से कर्म किये जाओ, हम भी कर्मों में लीन हैं ।

وَانتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ ﴿١٢٢﴾

(१२२) तथा तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।[2]

---

[1]अर्थात अल्लाह के बनाये भाग्य तथा निर्णय में यह बात स्थित है कि कुछ लोग स्वर्ग तथा कुछ नरक के अधिकारी होंगे तथा स्वर्ग एवं नरक को जिन्नों और इन्सानों से भर दिया जायेगा, जैसाकि हदीस (रसूल के कथन) में है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"स्वर्ग तथा नरक ने परस्पर विवाद किया, स्वर्ग ने कहा कि क्या कारण है कि मुझ में निर्बल तथा समाज के नीच, पतित लोग होंगे, नरक ने कहा कि मुझ में बड़े-बड़े अत्याचारी तथा अहंकारी लोग होंगे । अल्लाह ने स्वर्ग से कहा कि तू मेरी दया की सूचक है तेरे द्वारा मैं जिस पर चाहूँ अपनी दया करूँ, तथा नरक से अल्लाह ने फ़रमाया तू मेरी यातना की द्योतक है तेरे द्वारा मैं जिस को चाहूँ यातना दूँ । अल्लाह स्वर्ग तथा नरक दोनों को भर देगा, स्वर्ग में नित्य उस की दया होगी यहाँ तक कि वह ऐसी सृष्टि उत्पन्न करेगा जो स्वर्ग के शेष क्षेत्र में निवास करेगी तथा नरक नरकवासियों की अधिकता के उपरान्त भी هل مِنْ مزيدٍ (क्या और भी हैं) पुकारती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह उसमें अपने पग रख देगा, जिस पर नरक पुकारेगी «قَطْ قَطْ، وَعِزَّتِكَ!» बस, बस तेरी मर्यादा तथा प्रताप की शपथ (सहीह बुख़ारी किताबुत् तौहीद, बाबो माजाअ फ़ी कौलिहि तआला إن رحمة الله قريب من المحسنين तथा तफ़सीर सूर: क़ाफ़-मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबुन्नार यदख़ुलुहल जब्बारून वल्जन्नते यदख़ुलुह ज्जोअफ़ा) ।

[2]अर्थात शीघ्र ही तुम्हें पता चल जायेगा कि सफलता किस के भाग्य में आती है तथा यह भी ज्ञात हो जायेगा कि अत्याचारी लोग सफल नहीं होंगे । अत: यह वचन शीघ्र ही पूर्ण

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾

(१२३) तथा आकाशों एवं धरती का परोक्ष ज्ञान अल्लाह (तआला) को ही है, तथा सारे कार्यों की प्रत्यागता भी उसी की ओर है। अत: तुझे उसी की इबादत करनी चाहिए तथा उसी पर भरोसा रखना चाहिये एवं तुम जो कुछ करते हो उससे अल्लाह (तआला) अनजान नहीं।

सूरतु यूसुफ़-१२

سُوْرَةُ يُوْسُفَ

सूर: यूसुफ़ मक्का में अवतरित हुई तथा इस की एक सौ ग्यारह आयतें एवं बारह रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾

(१) अलिफ़॰ लाम॰ रा॰, यह दिव्य प्रकाश वाली पुस्तक की आयतें हैं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾

(२) नि:संदेह हम ने इसे अरबी क़ुरआन उतारा है कि तुम समझ सको।[1]

हुआ तथा अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजयी किया तथा सम्पूर्ण अरब महाद्वीप इस्लाम के अधीनस्थ हो गया।

[1]आकाशीय किताबों को उतारने का उद्देश्य लोगों को मार्गदर्शन एवं निर्देशन देना है तथा यह लक्ष्य तभी प्राप्त हो सकता है, जब वह किताब उस भाषा में हो जिस को वे समझ सके, इसलिये सभी आकाशीय किताबें उस समुदाय की अपनी भाषा में उतारी गयीं, जिस समुदाय के मार्गदर्शन के लिये वह उतारी गई थीं। क़ुरआन करीम के प्रथम सम्बोधित लोग अरबवासी थे, इसलिये क़ुरआन भी अरबी भाषा में उतारा गया। इस के अतिरिक्त अरबी भाषा अपनी व्याख्या, प्रभाव तथा शब्दार्थों के वर्णन के आधार पर संसार की अन्य भाषाओं से श्रेष्ठ भाषा है। इसीलिये अल्लाह तआला ने इस श्रेष्ठ किताब (क़ुरआन मजीद) को श्रेष्ठ भाषा (अरबी) में श्रेष्ठ रसूल (परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर श्रेष्ठ फ़रिश्ते (जिब्रील) के द्वारा अवतरित किया तथा मक्का नगर जहाँ इस का आरम्भ हुआ, संसार के श्रेष्ठतम नगरों में श्रेष्ठ नगर है तथा जिस महीनें में इस का अवतरण शुभारम्भ हुआ, वह भी श्रेष्ठ महीना रमज़ान का है।

(३) हम आपके समक्ष सर्वश्रेष्ठ वर्णन[1] प्रस्तुत करते हैं, इस कारण कि हमने आपकी ओर यह क़ुरआन वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा उतारा है तथा निश्चय इससे पूर्व आप अनजानों में से थे ।[2]

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْآنَ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ③

(४) जबकि यूसुफ़ [3] ने अपने पिता से बताया कि पिताजी मैंने ग्यारह सितारों को तथा सूर्य-

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ

---

[1] "قَصَص" यह धातु है । अर्थ है किसी वस्तु का अनुगमन, अभिप्राय एक रमणीय घटना है । قِصَّة मात्र कहानी अथवा कल्पित कथा को नहीं कहा जाता है, बल्कि पूर्व में व्यतीत घटना के वर्णन को (अर्थात उस के पीछे लगने को) क़िस्सा कहा जाता है । यह विगत समाचारों का सत्य तथा वास्तविक वर्णन है तथा उस घटना में ईर्ष्या-द्वेष का परिणाम, अल्लाह की सहायता का चमत्कार, अहंवाद की चंचलता तथा दुराचार का परिणाम तथा अन्य मानवी स्थितियों एवं घटनाओं का मनोरम वर्णन तथा बड़े शिक्षाप्रद पक्ष हैं, इसलिये क़ुरआन ने इसे श्रेष्ठतम सर्वोत्तम कथा कहा है ।

[2]क़ुरआन करीम के इन शब्दों से भी स्पष्ट होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को परोक्ष का ज्ञान नहीं था, वरन् अल्लाह तआला आपको अनजान न कहता । दूसरी बात यह विदित हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे नबी हैं क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्यी (प्रकाशना) द्वारा ही इस सत्यकथा का वर्णन किया गया है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न किसी के शिष्य थे, कि किसी गुरू से सीख कर वर्णन कर देते, तथा न किसी अन्य से ही ऐसा सम्बन्ध था कि जिस से सुनकर इतिहास की यह घटना उसके विशेष खण्डों के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रसारित कर देते । यह निःसंदेह अल्लाह तआला ही ने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा है, जैसाकि इस स्थान पर स्पष्ट किया गया है ।

[3]अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने समुदाय के समक्ष यूसुफ़ की कथा का वर्णन करो, जब उसने अपने पिता से कहा । पिता आदरणीय याक़ूब थे, जैसाकि अन्य स्थान पर वर्णन है तथा हदीस में भी इस वंशावली को उल्लेख किया गया है, अलकरीम इब्नुल करीम इब्नुल करीम इब्नुल करीम यूसुफ़ बिन (पुत्र) याक़ूब बिन (पुत्र) इसहाक़ बिन इब्राहीम (मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ ९६)

وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ۝

चन्द्रमा को[1] देखा कि वे सभी मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।

قَالَ يَٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَىٰٓ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا۟ لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَٰنَ لِلْإِنسَٰنِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

(५) (याक़ूब अलैहिस्सलाम ने) कहा कि हे मेरे प्यारे पुत्र ! अपने इस स्वप्न की चर्चा अपने भाईयों से न करना। ऐसा न हो कि वे तेरे साथ कोई छल करें, [2] शैतान तो मनुष्य का खुला शत्रु है।[3]

وَكَذَٰلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ

(६) तथा इसी प्रकार [4] तेरा प्रभु तुझे निर्वाचित करेगा तथा तुझे मामला बात समझने (अर्थात स्वप्न-फल बताने) की भी शिक्षा देगा तथा

---

[1]कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि यह ग्यारह सितारों से तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के भाई हैं जो ग्यारह ही थे तथा चन्द्रमा तथा सूर्य से तात्पर्य माता-पिता हैं तथा स्वप्न-फल चालीस वर्ष पश्चात् उस समय सामने आया जब ये सभी भाई अपने माता-पिता के साथ मिस्र गये तथा वहाँ आदरणीय यूसुफ़ के समक्ष झुक गये। जैसाकि इसका विवरण सूर: के अन्त में आयेगा।

[2]आदरणीय याक़ूब ने स्वप्न से यह अनुमान लगा लिया कि उन का यह पुत्र मर्यादित पुरूष होगा, इसलिये उन्हें भय हुआ कि उस की इस प्रतिष्ठा का अनुमान लगाकर उस के अन्य भाई उसे कोई हानि न पहुँचाये, इस कारण उन्होंने इस स्वप्न की चर्चा करने से रोक दिया।

[3]यह भाईयों के छल-कपट के कारण की चर्चा कर दी कि शैतान मनुष्य का आदि से ही शत्रु है। इसलिये वह मनुष्यों को भटकाने, बहकाने तथा उन्हें ईर्ष्या तथा द्वेष में लीन रहने के लिये हर समय प्रेरित करता रहता है तथा घात में रहता है। अत: यह शैतान के लिये सुअवसर था कि आदरणीय यूसुफ़ के विरूद्ध भाईयों के दिलों में द्वेष तथा ईर्ष्या की अग्नि भड़का दे। जैसाकि वास्तव में उस ने बाद में ऐसा ही किया तथा आदरणीय याक़ूब का अनुमान सत्य सिद्ध हुआ।

[4]अर्थात जिस प्रकार तेरे प्रभु ने सर्वश्रेष्ठ स्वप्न दिखाने के लिये चुन लिया, उसी प्रकार तेरा प्रभु तुझे सम्मान भी प्रदान करेगा तथा स्वप्नों के फल सिखायेगा। تأويل الأحاديث का मूल अर्थ बातों की तह तक पहुँचना है। यहाँ इस से तात्पर्य स्वप्न-फल है।

وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۟

अपनी अनुकम्पा तुझे पूर्णरूप से प्रदान करेगा,[1] तथा याक़ूब के परिवार को भी[2] जैसाकि उस ने इससे पूर्व तेरे दो पूर्वजों अर्थात इब्राहीम तथा इसहाक़ को भी भरपूर कृपा प्रदान की, निःसंदेह तेरा प्रभु बड़े ज्ञान वाला तथा अत्यधिक विवेक वाला है।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۟

(७) निःसंदेह यूसुफ़ तथा उस के भाईयों में प्रश्न करने वालों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं।[3]

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۟

(८) जबकि उन्होंने कहा कि यूसुफ़ तथा उसका भाई[4] हमारे पिता को हमसे अत्यधिक प्रिय हैं यद्यपि हम लोग शक्तिशाली पक्ष हैं,[5] कोई सन्देह नहीं कि हमारे पिता स्पष्ट ग़लती पर हैं।[6]

---

[1]इससे तात्पर्य नबूअत है, जो आदरणीय यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को प्रदान की गयी, अथवा वे पुरस्कार हैं जिन के मिश्र में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अधिकारी बने।

[2]इस से तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के भाई, उन की संतान आदि हैं, जो बाद में अल्लाह के पुरस्कार के अधिकारी बने।

[3]अर्थात इस घटना में अल्लाह तआला के विशाल सामर्थ्य तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत की सच्चाई की बड़ी निशानियाँ हैं। कुछ व्याख्याकारों ने यहाँ उन भाईयों के नाम तथा विवरण भी बताये हैं।

[4]"उस का भाई" से तात्पर्य बिनयामीन है।

[5]अर्थात हम दस भाई शक्तिशाली पक्ष तथा बहुसंख्यक हैं, जबकि यूसुफ़ तथा बिनयामीन (जिन की माता अथवा मातायें अलग थीं) केवल दो हैं, इस के पश्चात् भी पिता की आँखों के तारे एवं हृदय की शान्ति हैं।

[6]यहाँ ضلال से तात्पर्य वह त्रुटि है, जो उनके विचार में पिता का यूसुफ़ तथा बिनयामीन से अत्यधिक प्रेम था।

(९) यूसुफ़ की हत्या कर दो अथवा उसे (अज्ञात) स्थान पर पहुँचा दो, ताकि तुम्हारे पिता का ध्यान तुम्हारी ओर ही हो जाये। उसके पश्चात् तुम भले हो जाना।[1]

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ⑨

(१०) उन में से एक ने कहा कि यूसुफ़ की हत्या तो न करो, अपितु किसी अज्ञात कुऐं की तली में डाल आओ[2] कि उसे कोई यात्रियों का गिरोह उठा ले जाये, यदि तुम्हें करना ही है तो इस प्रकार करो।[3]

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ⑩

(११) (उन्होंने) कहा कि हे पिता! अन्ततः आप यूसुफ़ के विषय में हम पर विश्वास क्यों नहीं करते, हम तो उस के शुभचिन्तक हैं।[4]

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ⑪

---

[1]इस से तात्पर्य क्षमा-याचना है अर्थात कुऐं में डालकर अथवा हत्या करके अल्लाह से उस पाप की क्षमा माँग लेंगे।

[2] جُبٌّ कुऐं को तथा غَيَابَةٌ उसकी तली तथा गहराई को कहते हैं। कुआँ वैसे भी गहरा ही होता है तथा उसमें गिरी हुई वस्तु किसी को दिखायी नहीं देती। जब उस के साथ कुऐं की गहराई का भी वर्णन किया तो जैसेकि अतिश्योक्ति का प्रदर्शन किया।

[3]अर्थात आने-जाने वाले नवागन्तुक यात्री, जब पानी की खोज में कुऐं के निकट आयेंगे तो सम्भव है कि किसी के ज्ञान में आ जाये कि कुऐं में कोई मनुष्य गिरा हुआ है तथा वह उसे निकालकर अपने साथ ले जायें। यह विचार एक भाई ने प्रेम भावना से प्रस्तुत किया। हत्या की तुलना में यह प्रस्ताव वास्तव में प्रेम भावना ही का पक्ष है। भाईयों की ईर्ष्या तथा द्वेष की अग्नि इतनी भड़की हुई थी कि उस ने यह प्रस्ताव डरते-डरते प्रस्तुत किया कि यदि तुम्हें कुछ करना ही है, तो यह कार्य इस प्रकार कर लो।

[4]इस से ज्ञात होता है कि इससे पूर्व भी यूसुफ़ के भाईयों ने यूसुफ़ को ले जाने का प्रयत्न किया होगा तथा पिता ने अस्वीकार कर दिया होगा।

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿١٢﴾

(१२) कल आप उसे अवश्य हम लोगों के साथ भेज दीजिये कि खूब खाये-पिये तथा खेले[1] उसकी सुरक्षा के हम उत्तरदायी हैं।

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ﴿١٣﴾

(१३) (याक़ूब ने) कहा कि उसे तुम्हारा ले जाना मेरे लिये अति दुखद होगा, मुझे यह भी भय लगा रहेगा कि तुम्हारी असावधानी में उसे भेड़िया खा जाये।

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَخَاسِرُونَ ﴿١٤﴾

(१४) उन्होंने उत्तर दिया कि हम जैसे बड़े शक्तिशाली गिरोह की उपस्थिति में भी यदि उसे भेड़िया खा जाये तो हम बिल्कुल विवश हुए।[2]

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَأَجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾

(१५) फिर जब उसे ले चले तथा सभी ने मिल कर ठान लिया कि उसे सुनसान गहरे कुऐं की तह में फेंक दें, हमने यूसुफ़ की ओर वह्यी (प्रकाशना) की कि नि:संदेह (समय आ रहा है) कि तू उन्हें इस बात की सूचना उस अवस्था में देगा कि वे जानते ही न हों।[3]

---

[1]खेल-कूद की ओर आकर्षण, मनुष्य की प्रकृति में सम्मिलित है। इसीलिये उचित खेल-कूद पर अल्लाह तआला ने किसी युग में भी प्रतिबन्ध नहीं लगाया। इस्लाम में भी इन की आज्ञा है परन्तु प्रतिबन्धित। अर्थात ऐसे खेल-कूद की आज्ञा है, जो उचित हैं जिन में धार्मिक नियमों द्वारा निषेध न हों अथवा निषेधित तक पहुँचने का साधन न बनें। अत: आदरणीय याक़ूब ने भी खेल-कूद की सीमा तक मना नहीं किया। परन्तु यह शंका व्यक्त की कि तुम लोग खेल-कूद में लीन हो जाओ तथा उसे भेड़िया खा जाये। क्योंकि खुले मैदान तथा रेगिस्तानों में वहाँ भेड़िये सामान्य रूप से पाये जाते थे।

[2]यह पिता को विश्वास दिलाया जा रहा है कि यह किस प्रकार हो सकता है कि हम इतने भाईयों की उपस्थिति में भेड़िया यूसुफ़ को खा जाये।

[3]क़ुरआन करीम अति संक्षेप में घटना का वर्णन कर रहा है। अर्थ यह है कि जब अपने पूर्व योजना के अनुसार उन्होंने यूसुफ़ को कुऐं में फेंक दिया, तो अल्लाह तआला ने

(१६) तथा रात्रि (एशा) के समय (वे सब) अपने पिता के पास रोते हुए पहुँचे।

وَجَآءُوٓ أَبَاهُمْ عِشَآءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾

(१७) तथा कहने लगे कि प्रिय पिताजी ! हम आपस में दौड़ में लग गये तथा यूसुफ़ को सामान के पास छोड़ दिया तो भेड़िया उसे खा गया, आप तो हमारी बात पर विश्वास करने वाले नहीं चाहे हम पूरे सच्चे ही हों।[1]

قَالُوا۟ يَٰٓأَبَانَآ إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِندَ مَتَٰعِنَا فَأَكَلَهُ ٱلذِّئْبُ ۖ وَمَآ أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَٰدِقِينَ ﴿١٧﴾

(१८) तथा यूसुफ़ के कुर्ते को झूठे रक्त से भिगा कर लाये थे। (पिता ने) कहा, (इस प्रकार नहीं) बल्कि तुम ने अपने मन से ही एक बात बना ली है। अब धैर्य ही श्रेष्ठ है,[2] तथा

وَجَآءُو عَلَىٰ قَمِيصِهِۦ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَٱللَّهُ ٱلْمُسْتَعَانُ

आदरणीय यूसुफ़ को सांत्वना दी तथा साहस रखने के लिये वह्यी (प्रकाशना) की कि चिन्ता की आवश्यकता नहीं है, हम तेरी सुरक्षा ही नहीं करेंगे अपितु ऐसे उच्च स्थान पर तुझे आसीन करेंगे कि ये भाई भीख का प्याला तेरे समक्ष ले कर आयेंगे तथा फिर तू उन्हें बता देगा कि तुम ने अपने एक भाई के साथ इस प्रकार निष्ठुरता की थी जिसे सुन कर वह चकित तथा लज्जित होंगे। आदरणीय यूसुफ़ यद्यपि उस समय बालक थे, परन्तु जो बालक नबूअत से विभूषित होने वाले होते हैं, उन पर बचपन में ही वह्यी (प्रकाशना) आ जाती है, जैसे आदरणीय ईसा तथा यह्या आदि पर आयी।

[1]अर्थात यदि हम आप के लिये विश्वस्त तथा सत्यवादी होते तब भी आप यूसुफ़ के मामले में हमारी बात न मानते, अब तो वैसे ही हमारी स्थिति संदिग्ध व्यक्ति जैसी है, अब आप किस प्रकार हमारी बात मानेंगे।

[2]कहते हैं कि एक बकरी का बच्चा काट कर उस के रक्त से यूसुफ़ की कमीज भिगा ली तथा यह भूल गये कि यदि भेड़िया यूसुफ़ को खाता तो कमीज भी फाड़ता, कमीज फटी ही नहीं थी, जिस को देखकर और साथ ही आदरणीय यूसुफ़ के स्वप्न तथा नबूअत की शक्ति से अनुमान लगा कर आदरणीय याक़ूब ने कहा कि यह घटना इस प्रकार घटित नहीं हुई है, जैसे तुम वर्णन कर रहे हो, अपितु यह तुम्हारी मनगढ़त है। फिर भी जो होना था हो चुका था, आदरणीय याक़ूब उस के विवरण से अनजान थे, इसलिये केवल धैर्य के सिवाय कोई चारा न था तथा अल्लाह की सहायता के अतिरिक्त कोई सहारा न था।

عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

तुम्हारी बनायी हुई बातों पर अल्लाह ही से सहायता की प्रार्थना है।[1]

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा एक यात्री का गिरोह आया तथा उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल लटका दिया। कहने लगा वाह-वाह ! प्रसन्नता की बात है, यह तो एक बालक है।[2] उन्होंने उसे व्यापार का धन समझकर छिपा दिया[3] तथा अल्लाह (तआला)

---

[1]द्वयवादियों ने आदरणीय आयेशा पर जब आक्षेप लगाया तो उन्होंने भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रश्न तथा कथन का यही उत्तर दिया था।

«وَاللهِ لاَ أَجِدُ لِي وَلاَ لَكُمْ مَثَلاً إِلاَّ أَبَا يُوسُفَ، ﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ﴾».

"अल्लाह की सौगन्ध मैं स्वयं तथा आप लोगों के लिये वही उदाहरण पाती हूँ जिससे यूसुफ़ के पिता याक़ूब को दो चार होना पड़ा था तथा उन्होंने فَصَبْرٌ جَمِيلٌ (धैर्य रखना अत्योत्तम है) कह कर धैर्य तथा सहनशीलता का मार्ग अपनाया था।"(सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः यूसुफ़)

अर्थात मेरे लिये भी धैर्य एवं सहनशीलता के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं।

[2] وارد (वारिद) उस व्यक्ति को कहते हैं जो यात्रियों के गिरोह के लिये पानी आदि का प्रबन्ध करने के उद्देश्य से आगे-आगे चलता है ताकि उचित स्थान देखकर यात्रियों को ठहराया जा सके। यह वारिद (यात्रियों के लिये पानी का प्रबन्ध करने वाला) जब कुऐं पर आया तथा अपना डोल नीचे लटकाया तो आदरणीय यूसुफ़ ने उस की डोरी पकड़ ली। वारिद (जल-प्रबन्धक) ने एक सुन्दर बच्चे को देखा तो ऊपर खीच लिया तथा अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

[3] بضاعة व्यापार के सामान को कहते हैं أَسَرُّوهُ का कर्ता कौन है ? अर्थात आदरणीय यूसुफ़ को व्यापार सामग्री समझकर छिपा लेने वाला कौन है ? इसमें मतभेद है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने यूसुफ़ के भाईयों को कर्ता बताया है। इसका अर्थ यह है कि जब डोल के साथ यूसुफ़ भी कुऐं से बाहर निकले तो वहाँ यह भाई उपस्थिति थे, फिर भी उन्होंने वास्तविकता को छिपाये रखा, यह नहीं कहा कि यह हमारा भाई है तथा आदरणीय यूसुफ़ ने भी हत्या के डर से अपना भाई होना व्यक्त नहीं किया, बल्कि भाईयों ने उन्हें बिकाऊ

उससे सूचित था जो वे कर रहे थे ।[1]

(२०) तथा उन्होंने [2] उसे बहुत ही कम मूल्य गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला, वे तो यूसुफ़ के विषय में अत्यधिक रूचिहीन थे ।[3]

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾

कहा तो वे चुप रहे और अपना बिकना पसंद किया। अत: इस जल-प्रबंधक ने अपनी यात्रा के साथियों को यह शुभसूचना सुनाई कि एक बालक बिक रहा है। परन्तु यह बात घटनाक्रम से मेल नहीं खाती है। इन के विपरीत इमाम शौकानी ने أَسَرُّوهُ का कर्ता जल-प्रबंधक तथा उस की यात्रा के साथियों को कहा है क्योंकि उन्होंने यह प्रकट नहीं किया कि यह बालक कुऐं से निकला है, क्योंकि सभी यात्रियों का भाग 'व्यापारिक सामग्री' में हो जाता, बल्कि यात्रियों को उन्होंने जाकर यह बताया कि कुऐं के मालिकों ने यह बच्चा उनको सौंप दिया है ताकि इसे वे मिस्र जाकर बेच दें। परन्तु समीपवर्ती बात यह है कि यात्रियों ने बच्चे को 'व्यापार सामग्री' बनाकर छिपा लिया कि कहीं उसके निकट-सम्बंधी उसकी खोज में न आ जायें तथा इस प्रकार लेने के देने पड़ जायें, क्योंकि बच्चा होना तथा कुऐं में पाया जाना, इस बात का संकेत है कि वह किसी निकटवर्ती क्षेत्र का रहने वाला है तथा खेलते-कूदते आ गिरा है।

[1]अर्थात यूसुफ़ के साथ यह जो कुछ हो रहा था, अल्लाह तआला को उस का ज्ञान था। परन्तु अल्लाह तआला ने यह सब कुछ इसलिये होने दिया ताकि भाग्य का लिखा पूरा हो। इसके अतिरिक्त इस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये संकेत है अर्थात अल्लाह अपने पैग़म्बर को बता रहा है कि आप के समुदाय के लोग अवश्य दुख दे रहे हैं तथा मैं उस से रोकने का सामर्थ्य भी रखता हूँ। परन्तु मैं उसी प्रकार उन्हें अवसर दे रहा हूँ जिस प्रकार यूसुफ़ के भाईयों को अवसर दिया था। तथा अन्त में मैंने यूसुफ़ को मिस्र के राजसिंहासन पर आसीन करा दिया, तथा उस के भाईयों को उस के दरबार में तुच्छ तथा निस्सहाय करके खड़ा कर दिया। हे पैग़म्बर ! एक समय आयेगा कि आप भी सफल होंगे तथा ये कुरैश के सरदार आप की आँखों के संकेत तथा होठों के हिलने की प्रतीक्षा में रहेंगे। अत: मक्का विजय के अवसर पर यह समय शीघ्र ही आ गया।

[2]भाईयों ने अथवा दूसरी व्याख्या के अनुसार व्यापारिक यात्रा के यात्रियों ने बेचा।

[3]क्योंकि गिरी पड़ी वस्तु मनुष्य को बिना किसी परिश्रम के मिल जाती है, इसलिये वह चाहे कितनी भी बहुमूल्य हो, उस का सही मूल्य तथा आदर-सम्मान मनुष्य पर प्रकट नहीं होता।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن مِّصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾

(२१) मिस्रवासियों में से जिस ने उसे ख़रीदा था उस ने अपनी पत्नी[1] से कहा कि इसे आदर तथा सम्मान के साथ रखो, बहुत संभव है कि यह हमें लाभ पहुँचाये अथवा हम इसे अपना पुत्र ही बना लें, इस प्रकार हमने (मिस्र की) धरती पर यूसुफ़ के पाँव जमाये।[2] कि हम उसे स्वप्न के फलों कुछ का ज्ञान सीखा दें। अल्लाह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिकतर लोग अनजान होते हैं।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जब (यूसुफ़) पूर्ण यौवन को पहुँच गये, हमने उसे निर्णय की शक्ति तथा ज्ञान दे दिया।[3] हम भलाई करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَن نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा उस स्त्री ने जिस के घर यूसुफ़ थे यूसुफ़ को फुसलाना प्रारम्भ किया कि वह अपने मन की सुरक्षा करना छोड़ दे। तथा द्वार बन्द करके कहने लगी लो आ जाओ। (यूसुफ़ ने) कहा, अल्लाह बचाये ! वह मेरा प्रभु है, मुझे

---

[1]कहा जाता है कि उस समय मिस्र के राज-सिंहासन पर रय्यान बिन वलीद आसीन था, तथा यह अज़ीज़ जिस ने यूसुफ़ को ख़रीदा था, उस का वित्त मंत्री था, उस की पत्नी का नाम कुछ ने राईल तथा कुछ ने ज़ुलेख़ा बतलाया है। والله أعلم

[2]अर्थात जिस प्रकार हम ने यूसुफ़ को कुऐं तथा अत्याचारी भाईयों से मुक्ति दी, उसी प्रकार यूसुफ़ को हम ने मिस्र की धरती में एक उचित स्थान प्रदान किया।

[3]अर्थात नबूअत अथवा नबूअत से पूर्व की बुद्धिमानी तथा निर्णय की शक्ति।

उसने अति उत्तम प्रकार से रखा है। अन्याय करने वालों का भला नहीं होता।[1]

(२४) तथा उस स्त्री ने यूसुफ़ की इच्छा किया तथा यूसुफ़ उसकी इच्छा करते,[2] यदि वह अपने प्रभु का प्रतीक देख न लेते।[3] इसी प्रकार हुआ, इसलिये कि हम उससे बुराई तथा

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ أَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ۚ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ۚ

[1]यहाँ से आदरणीय यूसुफ़ की एक नई परीक्षा प्रारम्भ हुई। मिस्री अज़ीज़ की पत्नी, जिस को उस के पति ने विशेषरूप से कहा था कि यूसुफ़ को आदर-सम्मान के साथ रखे, वह आदरणीय यूसुफ़ की सुन्दरता पर मोहित हो गयी, तथा उन्हें पाप की प्रेरणा देने लगी, जिसे आदरणीय यूसुफ़ ने ठुकरा दिया।

[2]यह अनुवाद अधिकतर व्याख्याकारों की व्याख्या के अनुसार है। तथा जिन लोगों ने لَوْلَا के साथ जोड़कर यह अर्थ बताया है कि यूसुफ़ ने इच्छा ही नहीं की, इन व्याख्याकारों ने उसे अरबी भाषा शैली के विरूद्ध बताया है। तथा यह अर्थ लिखा है कि इच्छा तो यूसुफ़ ने भी कर ली थी, परन्तु एक तो यह स्वयं नहीं था, बल्कि मिस्री अज़ीज की पत्नी का प्रलोभन तथा दबाव उस में सम्मिलित था। दूसरे यह कि पाप की इच्छा करना पवित्रता के विरूद्ध नहीं है अपितु उस के अनुसार कर्म करना पवित्रता के विरूद्ध है (फ़तहुल क़दीर, इब्ने कसीर) परन्तु शोधकर्ता व्याख्याकारों ने यह अर्थ वर्णित किये हैं कि यूसुफ़ भी उस की इच्छा कर लेते यदि अपने प्रभु की निशानी न देखे होते। अर्थात उन्होंने अपने प्रभु की निशानी देख रखी थी। इसलिये मिस्री अज़ीज़ की पत्नी की इच्छा ही नहीं की। बल्कि पाप की प्रेरणा मिलते ही पुकार उठे مَعاذَ الله, परन्तु इच्छा न करने का यह अर्थ नहीं है कि मन में उत्तेजना ही नहीं उत्पन्न हुई। उत्तेजना उत्पन्न हो जाना अलग बात है तथा इच्छा करना अलग बात है। तथा वास्तविक बात यह है कि यदि किसी के पास काम उत्तेजना ही न उत्पन्न हो तो ऐसे व्यक्ति का पाप से बचना कोई कमाल नहीं। कमाल तो तब है कि जब मन में काम उत्तेजना उत्पन्न हो तथा फिर मनुष्य उस पर नियंत्रण करे तथा पाप से बच जाये। आदरणीय यूसुफ़ ने इसी चरम सीमा पर धैर्य तथा नियंत्रण का अनूठा नमूना प्रस्तुत किया।

[3]यहाँ प्रथम व्याख्या के आधार पर لَوْلَا का उत्तर नहीं दिया गया है। لَفعل مَا هَمَّ بِه लुप्त है अर्थात यदि यूसुफ़ प्रभु की निशानी नहीं देखते तो जो इच्छा की थी, कर डालते। यह प्रतीक क्या था ? इसमें विभिन्न कथन हैं। अर्थ यह है कि प्रभु की ओर से कोई ऐसी वस्तु आप को दिखाई गयी कि उसे देखकर आप मनोकामना को दबाने तथा रोकने में सफल हो गये। अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों की इसी प्रकार सुरक्षा करता है।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ۝٢٤

निर्लज्जा दूर कर दें।[1] नि:संदेह वह हमारे चयन किये हुए भक्तों मे से था।

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝٢٥

(२५) तथा दोनों द्वार की ओर दौड़े[2] उस स्त्री ने यूसुफ़ का वस्त्र (कुर्ता) पीछे से खींच कर फाड़ दिया तथा उस स्त्री का पति दोनों को द्वार के निकट ही मिल गया, तो कहने लगी जो व्यक्ति तेरी पत्नी के साथ बुरी इच्छा रखे बस उसका दण्ड यही है कि उसे बन्दी बना लिया जाये अथवा अन्य कोई घोर यातना दी जाये।[3]

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَفْسِي ۚ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝٢٦

(२६) (यूसुफ़ ने) कहा, यह स्त्री ही मुझे बहला फुसला कर (मेरी मनोकामना की सुरक्षा से असावधान करना) चाहती थी,[4] तथा स्त्री की जाति के एक व्यक्ति ने गवाही दी[5] कि

---

[1]अर्थात जिस प्रकार हमने यूसुफ़ को युक्ति दिखाकर, बुराई की इच्छा से उसे बचा लिया, उसी प्रकार हम ने उसे हर मामले में दुराचार तथा निर्लज्जता की बातों से दूर रखने का प्रवन्ध किया। क्योंकि वह हमारे चयनित भक्तों में से था।

[2]जब आदरणीय यूसुफ़ ने देखा कि वह स्त्री बुराई के कर्म करने पर बाध्य कर रही है, तो वह बाहर निकलने के लिये द्वार की ओर भागे, यूसुफ़ को पकड़ने के लिये स्त्री उन के पीछे दौड़ी, इस प्रकार दोनों द्वार की ओर लपके तथा दौड़े।

[3]अर्थात पति को देखते ही स्वयं निर्दोष बन गयी तथा सारा दोष यूसुफ़ पर लगा दिया तथा अपराधी बना कर के उनके लिये दण्ड भी निर्धारित कर दिया। यद्यपि वास्तविकता इस के विपरीत थी, अपराधिनी स्वयं थी जबकि आदरणीय यूसुफ़ निर्दोष थे तथा इस बुराई से बचने के इच्छुक तथा इस से बचने के लिये प्रयत्नशील रहा करते थे।

[4]आदरणीय यूसुफ़ ने जब यह देखा कि यह स्त्री सारे दोष उन्हीं पर आरोपित कर रही है, तो वास्तविकता स्पष्ट कर दी तथा कहा कि मुझे बुराई के लिये बाध्य तो यही करती रही है। मैं इस से बचने के लिये बाहर द्वार की ओर भागता हुआ आया हूँ।

[5]यह उन्हीं के परिवार का कोई बुद्धिमान व्यक्ति था जिस ने यह निर्णय दिया। निर्णय को यहाँ साक्ष्य के शब्द से वर्णन किया गया है, क्योंकि समस्या अभी जानकारी प्राप्त करने की थी। नवजात शिशु की साक्ष्य वाली बात प्रमाणित कथनों से सिद्ध नहीं। सहीहैन की

यदि उसका कुर्ता आगे से फटा हो तो स्त्री सच्ची है तथा यूसुफ़ झूठ बोलने वालों मे से है।

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُۥ قُدَّ مِن دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा यदि उसका कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है, तो स्त्री झूठी है तथा यूसुफ़ सच्चों में से है।

فَلَمَّا رَءَا قَمِيصَهُۥ قُدَّ مِن دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُۥ مِن كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

(२८) पति ने जो देखा कि कुर्ता पीछे से फटा है तो यह स्पष्ट कह दिया कि यह तो तुम स्त्रियों की चाल है, नि:संदेह तुम्हारे हथकंडे भारी हैं।[1]

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ وَٱسْتَغْفِرِى لِذَنۢبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنتِ مِنَ ٱلْخَاطِـِٔينَ ﴿٢٩﴾

(२९) यूसुफ़, अब इस बात को भूल जाओ,[2] तथा (हे स्त्री)! अपने पापों से क्षमा माँग, नि:संदेह तू पापियों में से है।[3]

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِى ٱلْمَدِينَةِ ٱمْرَأَتُ ٱلْعَزِيزِ تُرَٰوِدُ فَتَىٰهَا عَن نَّفْسِهِۦ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَىٰهَا فِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा नगर की स्त्रियों में चर्चा होने लगी कि अज़ीज़ की पत्नी अपने (युवक) दास को अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिये बहलाने-फुसलाने में लगी रहती है, उस के दिल में यूसुफ़ का प्रेम संचित है, हमारी समझ से तो वह स्पष्ट ग़लती पर है।[4]

हदीस से तीन नवजात शिशुओं के बात करने की हदीस है, जिन में यह चौथा नहीं है, जिस का वर्णन इस स्थान पर किया जाता है।

[1]यह अज़ीज़े मिस्र का क़थन है जो उस ने अपनी पत्नी की कुचरित्रता को देखकर स्त्रियों के विषय में कहा। यह न अल्लाह का कथन है तथा न यह प्रत्येक स्त्री के विषय में उचित है। इसलिये इसे प्रत्येक स्त्री पर आरोपण करके तथा इस आधार पर स्त्री को छल-कपट की मूर्ति बताना, क़ुरआन का कदापि उद्देश्य नहीं है। जैसाकि कुछ लोग इस वाक्य के आधार पर इस विषय में विचार व्यक्त करते हैं।

[2]अर्थात इस का प्रचार न करो।

[3]इससे ज्ञात होता है कि अज़ीज़ मिस्र पर आदरणीय यूसुफ़ की सत्यता प्रकट हो गयी थी।

[4]जिस प्रकार सुगन्ध को बन्द करके छुपाया नहीं जा सकता, प्रेम का मामला भी ऐसा ही है। यद्यपि अज़ीज़े मिस्र ने आदरणीय यूसुफ़ को इसे भूल जाने ले लिये कहा तथा

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾

(३१) उसने जब उनकी इस छलपूर्ण पिशुनता को सुना तो उन्हें आमंत्रित किया,[1] तथा उन के लिये एक सभा का आयोजन किया,[2] तथा उन में से प्रत्येक को एक छुरी दे दी। तथा कहा कि हे यूसुफ़ इनके समक्ष चले आओ [3] उन स्त्रियों ने जब उसे देखा तो अति महान जाना तथा अपने हाथ काट लिये, [4] तथा मुख से निकल गया कि पाकी अल्लाह के लिये है

नि:संदेह आप के मुख से उस का कभी वर्णन भी नहीं आया होगा, फिर भी यह घटना जगल की आग की तरह नगर में फैल गयी तथा मिस्री स्त्रियों में इस का चर्चा सामान्य रूप से होने लगा, स्त्रियाँ आश्चर्य चकित थीं कि यदि प्रेम करना था तो किसी सुन्दर आकर्षक पुरूष से करती, यह क्या कि अपने ही दास पर मर मिटी, यह तो उस की बहुत बड़ी मूर्खता है।

[1]मिस्री स्त्रियों की पिशुनता की बातों तथा व्यंग एवं कटाक्ष को छल कहा गया है। जिस का कारण कुछ व्याख्याकारों ने यह वर्णन किया है कि उन स्त्रियों को भी यूसुफ़ की सुन्दरता के विषय में सूचनायें मिल रही थीं। अत: साक्षात् सुन्दरता को देखना चाहती थीं। अत: वह अपने छल (षडयंत्र) में सफल हो गयीं। अज़ीज़ की पत्नी ने यह बतलाने के लिये कि जिस पर मैं मोहित हुई हूँ वह एक दास अथवा जनसामान्य नहीं है, अपितु उस को देखकर अपना दिल व जान हार जाना कोई अनहोनी बात नहीं, उन स्त्रियों के लिए भोज का प्रवन्ध किया तथा उन्हें भोज का निमंत्रण भेजा।

[2]अर्थात उन के लिये ऐसा आसन का प्रबंध किया जहाँ तकिये लगे थे, जैसाकि आजकल भी अरबों में ऐसा आसन सामान्य रूप से मिलता है यहाँ तक कि होटलों तथा भोजनालयों में भी इस का प्रबंध है।

[3]अर्थात आदरणीय यूसुफ़ को उस समय तक छिपाये रखा। जब सभी स्त्रियों ने हाथों में छूरियाँ पकड़ लीं तो अज़ीज़ की पत्नी (ज़ुलेख़ा) ने आदरणीय यूसुफ़ को सभा में उपस्थिति होने का आदेश दिया।

[4]अर्थात यूसुफ़ का सौन्दर्य देखकर एक तो उनकी श्रेष्ठता तथा प्रतिष्ठा को स्वीकार किया तथा दूसरे उन पर ऐसी वेसुध तथा मुग्ध हो गई कि छुरियाँ अपने हाथों पर चला लीं, जिससे उन के हाथ कट कर रक्त रंजित हो गये। हदीस में आता है कि आदरणीय यूसुफ़ को आधी सुन्दरता प्रदान की गयी है। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबुल इसराअ)

यह मनुष्य कदापि नहीं, यह तो निःसंदेह कोई बहुत बड़ा फ़रिश्ता है ।[1]

(३२) (उस समय मिस्र के अज़ीज़ की पत्नी ने) कहा कि यही है जिन के विषय में तुम मुझे बुरा भला कह रहीं थीं ।[2] मैंने हर प्रकार से इससे अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहा, परन्तु यह बेदाग़ बचा रहा, तथा जो कुछ मैं इस से कह रही हूँ, यदि यह न करेगा तो निःसंदेह यह बन्दी बना दिया जायेगा तथा निश्चय यह अत्यधिक अपमानित होगा ।[3]

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ۗ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۗ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

(३३) (यूसुफ़ ने) कहा कि ऐ मेरे प्रभु ! जिस बात की ओर यह स्त्रियाँ मुझे बुला रही हैं, उस से तो कारागार मुझे अत्यधिक प्रिय है,

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَىَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِىْۤ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّىْ

[1]इस का यह अर्थ नहीं कि फ़रिश्ते मनुष्य से रूप-रेखा में अच्छे अथवा श्रेष्ठ हैं । क्योंकि फ़रिश्तों को मनुष्यों ने देखा ही नही है । इस के अतिरिक्त मनुष्यों के लिये स्वयं अल्लाह ने क़ुरआन में स्पष्ट किया है कि हमने उसे सर्वोत्तम रूप में पैदा किया है । इन स्त्रियों ने मनुष्य के रूप को इसलिये नगण्य किया कि उन्होंने सुन्दरता का रूप जो मनुष्य के रूप में देखा उन की दृष्टि ने कभी नहीं देखा था । तथा उन्होंने फ़रिश्तों से तुलना इसलिये की कि जन सामान्य यही समझता है कि फ़रिश्ते गुण तथा रूप के अनुसार ऐसा रूप रखते हैं जो मनुष्य के रूप से उच्च है । इससे यह ज्ञात होता है कि नबियों के असाधारण विशेषताओं तथा गुणों के कारण उन्हें मानव जाति से निकाल कर दिव्य प्रकाश वाली प्राणी में रख देना प्रत्येक युग के ऐसे लोगों का कार्य रहा है, जो नबूअत तथा उस के पद से अनभिज्ञ होते हैं ।

[2]जब अज़ीज़ की पत्नी ने देखा कि उस की चाल सफल रही है तथा स्त्रियाँ यूसुफ़ की सुन्दरता के प्रकाश से मुग्ध हो गयी हैं, तो कहने लगी कि इस की एक झलक से तुम्हारी यह दशा हो गयी है तो क्या तुम अब भी मुझे इस के प्रेम में पड़े रहने को बुरा कहोगी ? यही वह दास है जिस के विषय में तुम मुझे धिक्कारती हो ।

[3]स्त्रियों को मुग्ध होती देखकर उस का साहस और बढ़ा तथा बेशर्म तथा लज्जा रहित होकर उस ने अपनी बुरी इच्छा को एक बार पुनः व्यक्त किया ।

كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَٰهِلِينَ ۝٣٣

यदि तूने उन के छल मुझ से दूर न किया तो मैं इन की ओर आकर्षित हो जाऊँगा, तथा बिल्कुल मूर्खों में सम्मिलित हो जाऊँगा ।[1]

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝٣٤

(३४) उस के प्रभु ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली तथा उन स्त्रियों के छल से उसे बचा लिया । निःसंदेह वह सुनने वाला तथा जानने वाला है ।

ثُمَّ بَدَا لَهُم مِّن بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ۝٣٥

(३५) फिर उन सभी लक्षणों के देख लेने के पश्चात् उन्हें यही भला लगा कि यूसुफ़ को कुछ समय के लिये कारागार में रखें ।[2]

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝٣٦

(३६) तथा उस के साथ ही दो अन्य नवयुवक कारागार में आये। उन में से एक ने कहा कि मैंने स्वप्न में अपने आप को मदिरा निचोड़ते हुए देखा है, तथा दूसरे ने कहा कि मैंने अपने आप को देखा है कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुए हूँ, जिसे पक्षी खा रहे हैं हमें आप

[1]आदरणीय यूसुफ़ ने यह प्रार्थना अपने दिल में की, क्योंकि एक ईमानवाले के लिये प्रार्थना भी एक हथियार है । हदीस में आता है सात आदमियों को अल्लाह तआला अर्श की छाया प्रदान करेगा । उन में से एक वह व्यक्ति है जिसे एक ऐसी स्त्री पाप के लिये आमान्त्रित करे जो सुन्दर भी हो तथा उच्च पद पर आसीन भी हो । परन्तु वह उस के उत्तर में यह कह दे कि मैं तो "अल्लाह से डरता हूँ ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल आज़ान बाबु मन जलस फ़िल मस्जिद यन्तज़िरूस्सलात व फ़ज़लुल मस्जिद तथा सहीह मुस्लिम किताबुज़्ज़कात बाबु फ़ज़्ल एख़फ़ा इअस्सदक़:)

[2]सत्यता तथा पवित्रता स्पष्ट हो जाने के पश्चात् भी यूसुफ़ को कारागार में डालने का यही कारण उन के समक्ष हो सकता था कि मिस्री अज़ीज़ आदरणीय यूसुफ़ को अपनी पत्नी से दूर रखना चाहता होगा ताकि पुनः वह यूसुफ़ को अपनी चाल में फंसानें का प्रयत्न न करे, जैसाकि उस का ऐसा विचार था ।

इसका फल बतायें, हमें तो आप गुणी व्यक्ति प्रतीत होते हैं ।[1]

(३७) (यूसुफ़ ने) कहा तुम्हें जो खाना दिया जाता है उस के तुम्हारे पास पहुँचने से पूर्व ही मैं तुम्हें उसका फल बता दूँगा। यह सब कुछ उस ज्ञान का परिणाम है जो मुझे मेरे प्रभु ने सिखाया है।[2] मैंने उन लोगों का धर्म छोड़ दिया है, जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते तथा आख़िरत को भी अस्वीकार करते हैं।[3]

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَن يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۚ إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٧﴾

(३८) मैं अपने पिता तथा पूर्वजों के धर्म का अनुयायी हूँ अर्थात इब्राहीम, इसहाक़ एवं याक़ूब के धर्म का,[4] हमें कदापि यह स्वीकार नहीं कि

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَا

---

[1]यह दोनों नवयुवक राज दरबार से सम्बन्ध रखते थे। एक शराब पिलाने पर नियुक्त था, दूसरा रोटी बनाता था। किसी कारण से उन्हें कारागार में डाल दिया गया था। आदरणीय यूसुफ़ अल्लाह के पैग़म्बर थे, धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ इबादत, तपस्या, संयम, सत्यता तथा चरित्र एवं कर्म में अन्य बन्दियों से श्रेष्ठ थे। इस के अतिरिक्त स्वप्नों के फलों का ज्ञान अल्लाह ने प्रदान कर रखा था। इन दोनों ने स्वप्न देखा तो प्राकृतिक रूप से वे आदरणीय यूसुफ़ के पास आये तथा कहा कि आप हमें अच्छे लोगों में से दिखायी दे रहे हैं। हमें हमारे स्वप्नों का फल बताईये। محسن का एक अर्थ कुछ ने यह भी किया है कि आप स्वप्नों का फल अच्छा बताते हैं।

[2]अर्थात मैं जो फल बताऊंगा वह भविष्यवेत्ताओं तथा ज्योतिष्यों के विचार तथा अनुमान पर आधारित नहीं होगी जिस में त्रुटि तथा उचित दोनों की सम्भावना होती है। बल्कि मेरा स्वप्न फल निश्चित ज्ञान पर आधारित होगा, जो अल्लाह की ओर से मुझे प्रदान किया गया है, जिस में त्रुटि होने की कोई भी सम्भावना नहीं है।

[3]यह अन्तर्ज्ञान तथा अल्लाह द्वारा प्रदान किया हुआ ज्ञान का कारण बताया जा रहा है कि मैंने उन लोगों का धर्म त्याग दिया है, जो अल्लाह तथा आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, उस के परिणाम स्वरूप अल्लाह की कृपा मुझ पर हुई।

[4]पूर्वज को भी पिता कहा गया है क्योंकि वे भी पिता ही हैं। फिर क्रम में भी पितामह (इब्राहीम) फिर निकटवर्ती दादा (इसहाक़) एवं फिर पिता (याक़ूब) का वर्णन किया। अर्थात प्रथमतः, प्रथम मूल, फिर द्वितीय मूल एवं फिर तृतीय मूल का वर्णन किया।

أَن نُّشْرِكَ بِاللَّهِ مِن شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ مِن فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

हम अल्लाह तआला के साथ किसी को भी साझीदार बनायें,[1] हम पर तथा अन्य सभी लोगों पर अल्लाह (तआला) की यह विशेष कृपा है, परन्तु अधिकतर लोग कृतघ्न होते हैं।

يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَأَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

(३९) ऐ मेरे कारागार के साथियो![2] क्या विभिन्न प्रकार के कई देवता श्रेष्ठ हैं[3] अथवा एक अल्लाह सर्वशक्तिमान?

مَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۚ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٠﴾

(४०) उसके अतिरिक्त जिनकी पूजा तुम कर रहे हो, वे सब नाम ही के हैं, जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने स्वयं गढ़ लिया है। अल्लाह तआला ने इनका कोई प्रमाण नहीं उतारा,[4] निर्णय देना अल्लाह (तआला) ही का कार्य है, उस का आदेश है कि तुम सभी उसके अतिरिक्त किसी की इबादत (वंदना) न करो।

---

[1]यह वही एकेश्वरवाद का आमन्त्रण तथा मूर्तिपूजन का खण्डन है, जो प्रत्येक नबी की मूल तथा प्रथम शिक्षा तथा आमन्त्रण होता था।

[2]कारागार के साथी इसलिये कहा कि यह सब एक अवधि से कारागार में बंद चले आ रहे थे।

[3]यह विभेद अस्तित्व, गुणों तथा संख्या के आधार पर है। अर्थात वह प्रभु, जो अस्तित्व में एक-दूसरे से भिन्न तथा गुणों में एक-दूसरे से अलग तथा संख्या में भी अनेक हों ये श्रेष्ठ हैं अथवा वह अल्लाह, जो अस्तित्व एवं गुणों में एक है जिस के न कोई बराबर है न साझीदार तथा वह सब पर प्रभावशाली तथा शासक है?

[4]इसका एक अर्थ तो यह है कि उसका नाम देवता तुमने स्वयं रखा है, जबकि न वे देवता हैं न उनके विषय में अल्लाह की ओर से कोई प्रमाण ही उतरा है। दूसरा अर्थ यह है कि उन देवताओं के जो विभिन्न नाम तुमने रखे हैं, जैसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, गंज बख़्श, शकरगंज आदि। यह सब तेरे अपने बनाये हुए हैं। उन का कोई प्रमाण अल्लाह ने नहीं उतारा।

यही धर्म सत्य है,[1] परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।[2]

(४१) ऐ मेरे कारागार के साथियो![3] तुम दोनों में से एक तो अपने राजा को मदिरा पान कराने के लिये नियुक्त हो जायेगा,[4] परन्तु दूसरे को फांसी दी जायेगी तथा पक्षी उसका सिर नोच-नोच कर खायेंगे ।[5] तुम दोनों जिसके विषय में पूछ रहे थे, उसका निर्णय हो गया ।[6]

يَٰصَٰحِبَيِ ٱلسِّجۡنِ أَمَّآ أَحَدُكُمَا فَيَسۡقِي رَبَّهُۥ خَمۡرٗاۖ وَأَمَّا ٱلۡأٓخَرُ فَيُصۡلَبُ فَتَأۡكُلُ ٱلطَّيۡرُ مِن رَّأۡسِهِۦۚ قُضِيَ ٱلۡأَمۡرُ ٱلَّذِي فِيهِ تَسۡتَفۡتِيَانِ ﴿٤١﴾

---

[1]यही धर्म, जिस की ओर मैं तुम्हें बुला रहा हूँ, जिस में एक अल्लाह की इबादत है, सत्य तथा स्थाई है, जिसका आदेश अल्लाह ने दिया है ।

[2] जिस के कारण अधिकतर लोग शिर्क करते हैं ।

﴿ وَمَا يُؤۡمِنُ أَكۡثَرُهُم بِٱللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشۡرِكُونَ ﴾

"उनमें अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के उपरान्त भी शिर्क करने वाले ही हैं ।" (सूर: यूसुफ़-१०६)

तथा फ़रमाया :

﴿ وَمَآ أَكۡثَرُ ٱلنَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِينَ ﴾

"हे पैग़म्बर ! तेरी इच्छा के उपरान्त अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान लाने वाले नहीं हैं ।"(सूर: यूसफ़-१०३)

[3]एकेश्वरवाद का प्रवचन देने के पश्चात अब आदरणीय यूसुफ़ उन के द्वारा वर्णित स्वप्नों के फलों का वर्णन कर रहे हैं ।

[4]यह वह व्यक्ति है जिस ने स्वप्न में अपने को अंगूर का रस तैयार करते देखा था । फिर भी आपने दोनों में से किसी एक को निर्धारित करके नहीं बताया कि मरने वाला पहले ही दुख तथा चिन्ता में घिर जाये ।

[5]यह वह व्यक्ति है जिस ने स्वप्न में अपने सिर पर रोटी रखे देखा था ।

[6]अर्थात अल्लाह के द्वारा लिखे भाग्य में पहले ही से लिखा था तथा जो फल मैंने बताया है यह अन्ततः पूरा होकर रहेगा । जैसाकि हदीस में है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

وَقَالَ لِلَّذِىْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِىْ عِنْدَ رَبِّكَ ؗ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِى السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ؕ﴿۴۲﴾

(४२) तथा जिस के सम्बन्ध में यूसुफ़ का विचार था कि उन दोनों में से यह छूट जायेगा, उस से कहा कि अपने राजा से मेरी चर्चा भी कर देना, फिर उसे शैतान ने राजा से वर्णन करना भुला दिया तथा यूसुफ़ ने कई वर्ष कारागार में काटे ।[1]

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّىْۤ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِىْ فِىْ رُءْيَاىَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿۴۳﴾

(४३) तथा राजा ने कहा कि मैंने स्वप्न देखा है कि सात मोटी-ताज़ी गायें हैं, जिनको सात दुबली-क्षीण सी गायें खा रही हैं तथा सात बालियाँ हैं हरी-भरी तथा सात अन्य बिल्कुल सूखी हुई । हे सभासदो ! मेरे इस स्वप्न का फल बताओ यदि तुम स्वप्न का फल बता सकते हो ।

قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾

(४४) उन्होंने उत्तर दिया कि यह तो उड़ते हुए व्यग्र स्वप्न हैं तथा इस प्रकार के व्यग्र स्वप्न के फल जानने वाले हम नहीं ।[2]

"स्वप्न जब तक उसका फल न निकाल लिया जाये, पक्षी के पैर पर है । जब फल निकाल लिया जाये तो घटित हो जाता है ।" (मुसनद अहमद, उदघृत इब्ने कसीर)

[1] بِضْعَ का शब्द तीन से लेकर नौ तक के अंकों को कहा जाता है । वहब बिन मुनब्बह का कथन है कि आदरणीय अय्यूब परीक्षा में तथा यूसुफ़ कारागार में सात वर्ष रहे तथा बुख़्तनसर का प्रकोप भी सात वर्ष रहा । और कुछ के निकट बारह वर्ष तथा कुछ के निकट चौदह वर्ष कारागार में रहे ।

[2] أَضْغَاثٌ बहुवचन है ضِغْثٌ का, जिसका अर्थ 'घास के गट्ठर' है । أَحْلَام ، حِلْمٌ (अर्थ स्वप्न) का बहुवचन है । أَضْغَاث أَحْلَام का अर्थ होगा 'चिन्तापूर्ण स्वप्न' अथवा 'व्यग्रचित स्वप्न', जिनका कोई फल न हो । यह स्वप्न उस राजा को आया मिस्री अज़ीज़ जिस का मंत्री था । अल्लाह तआला को इस स्वप्न के द्वारा यूसुफ़ को कारागार से निकालना था । अत: राजा के भविष्यवेत्ताओं, तथा ज्योतिषियों ने इस विलक्षण स्वप्न का फल बताने में अपनी असमर्थता व्यक्त की । कुछ कहते हैं कि ज्योतिषियों के इस कथन का अर्थ साधारणत: स्वप्न फल बताने के ज्ञान का खण्डन है तथा कुछ कहते हैं कि वे स्वप्न फल बताने के

(४५) तथा उन बंदियों में से छूटे हुए को एक समय के पश्चात् याद आ गया तथा कहने लगा मैं तुम्हें इस का फल बतला दूँगा, मुझे जाने की आज्ञा प्रदान कीजिए ।[1]

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ
أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ
فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٥﴾

(४६) हे यूसुफ़ ! हे अति सत्यवादी यूसुफ़ ! आप हमें इस स्वप्न का फल बताइए कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली (अस्वस्थ) गायें खा रही हैं तथा सात बिल्कुल हरी बालियाँ है तथा सात ही अन्य भी बिल्कुल सूखी हैं, ताकि मैं वापस जाकर उन लोगों से कहूँ कि वे सभी जान लें ।

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي
سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ
عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ
يَابِسَاتٍ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾

(४७) (यूसुफ़ ने) उत्तर दिया कि तुम सात वर्ष निरन्तर नियमबद्ध होकर अन्न बोना तथा उसे काटकर बालियों सहित ही रहने देना, अपने भोजन के लिये थोड़ी-सी मात्रा के सिवाय ।

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا
فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ
إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾

(४८) उस के पश्चात् सात वर्ष अत्यन्त अकाल के आयेंगे, वे उस अन्न को खा जायेंगे, जो तुम ने उन के लिये भण्डार कर रखा था,[2] सिवाय

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ
شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ

ज्ञान से अनजान नहीं थे न इस को उन्होंने नकारा, उन्होंने केवल इस स्वप्न का फल बताने में असमर्थता व्यक्त की ।

[1]यह कारागार से छूटने वाला एक साथी था, जिस से आदरणीय यूसुफ़ ने कहा था कि अपने मालिक से मेरा वर्णन करना ताकि मेरे छूटने की व्यवस्था हो जाये । उसे अचानक याद आया तथा उस ने कहा कि मुझे समय दो मैं तुम्हें आकर इसका फल बतलाता हूँ । अतः वह निकलकर सीधे यूसुफ़ के पास पहुँचा तथा स्वप्न का विवरण सुनाया तथा उसका फल पूछा ।

[2]अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ को 'स्वप्न फल' का ज्ञान भी प्रदान किया था । इसलिये वह इस स्वप्न की तह तक शीघ्र पहुँच गये । उन्होंने पुष्ट-स्वस्थ गायों से तात्पर्य सात वर्ष ऐसे लिये जिन में अधिक उपज होगी तथा सात दुर्बल गायों से उस के विपरीत सात वर्ष सूखा अकाल के । इसी प्रकार सात हरी बालियों से तात्पर्य लिया कि धरती अधिक पैदावार देगी तथा सात सूखी बालियों से अर्थ यह लिया कि इन सात वर्षों

إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾

उस के जो थोड़े से तुम रोक रखते हो ।[1]

ثُمَّ يَأْتِي مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) फिर इस के पश्चात् जो वर्ष आयेगा उस में लोगों पर बहुत वर्षा होगी और उस में (अंगूर का रस भी) बहुत निचोड़ेंगे ।[2]

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा राजा ने कहा कि उसे (यूसुफ़) को मेरे पास लाओ ।[3] जब संदेशवाहक उसके (यूसुफ़ के) पास पहुँचा तो उन्होंने कहा कि अपने राजा के पास वापस जाओ तथा उनसे पूछो कि उन स्त्रियों की वास्तविक घटना क्या है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे । [4] उनके छल को उचितरूप से जानने वाला मेरा प्रभु ही है ।

में धरती पर उपज नहीं होगी । तथा फिर उसके लिये प्रयोजन भी बताया कि सात वर्ष तुम निरन्तर कृषि करो तथा जो अनाज हो उसे काटकर बालियों सहित रखो ताकि उनमें अनाज अधिक सुरक्षित रहे, फिर जब सात वर्ष अकाल के आयेंगे तो यह अनाज तुम्हारे काम आयेगा, जिस का भण्डार तुम अब करोगे ।

[1] مما تحصنون से तात्पर्य बीज के लिये सुरक्षित दाने हैं, जो पुन: बोये जाते हैं ।

[2]अर्थात अकाल के सात वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् खूब वर्षा होगी, जिसके परिणाम स्वरूप खूब पैदावार होगी तथा तुम अंगूरों से उस का रस निकालोगे, जैतून का तेल निकालोगे तथा पशुओं के दूध निकालोगे । स्वप्न के इस फल से स्वप्न का कितना सुन्दर सम्बन्ध है, जिस को केवल वही समझ सकता है, जिसे अल्लाह तआला ऐसी उचित योग्यता, प्रबोध तथा ज्ञान प्रदान करे जो अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ को प्रदान किया था ।

[3]अर्थ यह है कि जब वह व्यक्ति स्वप्न का फल ज्ञात करके राजा के पास गया तथा उसे बताया, तो वह उस फल से तथा आदरणीय यूसुफ़ की बतायी हुई योजना से अत्यधिक प्रभावित हुआ तथा उस ने अनुमान लगाया कि वह व्यक्ति, जिसे दीर्घकाल से कारागार में रखा गया है, विशेष ज्ञान, महानता एवं उत्तम प्रतिभा का व्यक्ति है । अत: राजा ने उन्हें दरबार में प्रस्तुत करने का आदेश दिया ।

[4]आदरणीय यूसुफ़ ने देखा कि राजा अब कृपा करना चाहता है, तो उन्होंने इस प्रकार मात्र शाही कृपा से कारागार से निकलना नहीं चाहा, बल्कि अपने चरित्र की उच्चता तथा पवित्रता के सिद्ध करने को प्राथमिकता दी ताकि दुनियाँ के समक्ष आप के चरित्र का सौन्दर्य तथा उच्चता प्रष्ट हो जाये । क्योंकि अल्लाह की ओर से आह्वान करने वाले के लिये ये सत्यता तथा पवित्रता एवं सुचरित्रता अति आवश्यक है ।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدتُّنَّ يُوسُفَ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ قُلْنَ حَٰشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِن سُوٓءٍ ۚ قَالَتِ ٱمْرَأَتُ ٱلْعَزِيزِ ٱلْـَٰٔنَ حَصْحَصَ ٱلْحَقُّ أَنَا۠ رَٰوَدتُّهُۥ عَن نَّفْسِهِۦ وَإِنَّهُۥ لَمِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٥١﴾

(५१) (राजा ने) पूछा, ऐ स्त्रियो ! उस समय की सत्य घटना क्या है, जब तुम छल करके यूसुफ़ को उस की हार्दिक इच्छा से भटकाना चाहती थीं, उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया कि (अल्लाह जानता है) हम ने यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं पायी, [1] फिर तो अज़ीज़ की पत्नी भी बोल उठी कि अब तो सच्ची बात स्पष्ट हो गई है। मैंने ही उसे बहकाने का प्रयत्न किया था उसकी हार्दिक इच्छा से, तथा नि:संदेह वह सत्यवादियों मे से है।[2]

ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّى لَمْ أَخُنْهُ بِٱلْغَيْبِ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى كَيْدَ ٱلْخَآئِنِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) (यूसुफ़ ने कहा) यह इस कारण कि (अज़ीज़) को ज्ञात हो जाये कि मैंने उसके साथ विश्वासघात नहीं किया[3] तथा यह भी कि अल्लाह छली एवं कपटियों की चाल नहीं चलने देता।[4]

---

[1]राजा द्वारा पूछे जाने पर सभी स्त्रियों ने यूसुफ़ की पवित्रता को स्वीकार किया।

[2]अब अज़ीज़ की पत्नी (ज़ुलेख़ा) के लिये भी यह स्वीकार कर लेने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं शेष नहीं रहा कि यूसुफ़ निर्दोष है तथा यह चाल मेरी ही ओर से हुई थी, इस फ़रिश्ता जैसे आदमी का इस ग़लती से कोई सम्बन्ध नहीं।

[3]जब कारागार में आदरणीय यूसुफ़ को यह सारा वृतान्त सुनाया गया, तो उसे सुनकर यूसुफ़ ने कहा तथा कुछ कहते हैं कि राजा के पास जाकर उन्होंने यह कहा तथा कुछ व्याख्याकारों के निकट यह भी अज़ीज़ की पत्नी (ज़ुलेख़ा) का ही कथन है तथा अर्थ यह है कि यूसुफ़ की अनुपस्थिति में भी उसे अनुचित रूप से दोषी करके विश्वासघात नहीं करती हूँ बल्कि ईमानदारी की माँगों को अपने सामने रखते हुए अपनी ग़लती स्वीकार करती हूँ। अथवा यह अर्थ है कि मैं ने अपने पति के साथ विश्वासघात नहीं किया तथा किसी महापाप में नहीं पड़ी। इमाम इब्ने कसीर ने इसी कथन को प्राथमिकता दी है।

[4]कि वह सदैव अपने छल-कपट में सफल ही रहें। बल्कि उन का प्रभाव अस्थाई तथा सीमित होता है अन्त में विजय सत्य एवं सत्यवादियों की होती है, यद्यपि सत्यमार्गियों को अस्थाई रूप से परीक्षा के मार्ग से गुज़रना पड़े।